हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 8, अंकः 91, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 | 28 सितम्बर, 2023 दिन गुरुवार | गाजीपुर/वाराणसी

मेरी सरकार ने देश भर में लोगों के लिए चार करोड़ घर बनाए : मोदी

पीएम मोदी ने वडोदरा में किया रोड शो; नारी शक्ति वंदन अभिनंदन कार्यक्रम में हुए शामिल

वडोदरा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इन दिनों गुजरात दौरे पर हैं। यहां वडोदरा में उन्होंने रोड शो किया। इस दौरान उनके साथ गुजरात के सीएम भूपेंद्र पटेल भी मौजूद रहे। रोड शो के बाद पीएम नारी शक्ति वंदन अभिनंदन कार्यक्रम में शामिल हुए। यहां उनका भव्य स्वागत किया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को कहा कि उनके नाम पर कोई घर नहीं है, लेकिन उनकी सरकार ने देश की लाखों बेटियों को घर का मालिक बना दिया। मंगलवार से गुजरात के दो दिवसीय दौरे पर आए मोदी गुजरात के आदिवासी बहुल छोटा उदेपुर जिले के बोडेली शहर में शिक्षा क्षेत्र से संबंधित 5,000 करोड़ रुपये की परियोजनाओं सहित 4,500 करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न विकास परियोजनाओं की शुरूआत के मौके पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा, 'चूंकि मैंने आपके साथ महत्वपूर्ण समय बिताया है, मैं गरीब लोगों के सामने आने वाले मुद्दों को जानता हूं और मैंने हमेशा उन मुद्दों को हल करने की कोशिश की है। आज मैं संतुष्ट हूं क्योंकि मेरी सरकार ने देश भर में लोगों के

लिए चार करोड़ घर बनाए हैं। पिछली सरकारों के विपरीत, गरीबों के लिए एक घर हमारे लिए सिर्फ एक संख्या नहीं है। हम गरीबों के लिए घर बनाकर उन्हें सम्मान प्रदान करने का काम करते हैं। उन्होंने कहा, 'हम गरीबों की जरूरतों के अनुसार घर बना रहे हैं, वह भी बिना किसी बिचौलिये के। लाखों घर बनाए गए और हमारी महिलाओं के नाम पर पंजीकृत किए गए। हालांकि मेरे नाम पर घर नहीं है, लेकिन मेरी सरकार ने लाखों बेटियों को घर का मालिक बना दिया। मोदी ने यह भी कहा कि विश्व बैंक के अध्यक्ष अजय बंगा गांधीनगर में गुजरात शिक्षा विभाग के कमांड एंड कंट्रोल सेंटर से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उनसे देश भर में ऐसे केंद्र शुरू करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, "विश्व बैंक के अध्यक्ष (अजय बंगा) ने हाल ही में (गांधीनगर में) विद्या समीक्षा केंद्र का दौरा किया। बैठक के दौरान उन्होंने मुझसे भारत के सभी जिलों में ऐसे केंद्र शुरू करने का आग्रह किया और कहा कि विश्व बैंक इस परियोजना का हिस्सा बनने के लिए तैयार है। प्रधानमंत्री ने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी), जो तीन दशकों तक अधर में लटकी रही, आखिरकार उनकी सरकार द्वारा पेश की गई। किसी का नाम लिए बिना मोदी ने विपक्ष पर हमला बोलते हुए कहा कि वे आरक्षण की राजनीति कर रहे हैं। उन्होंने कहा, 'लेकिन जब तक मैं मुख्यमंत्री नहीं बना, गुजरात के आदिवासी इलाकों में कोई विज्ञान स्कूल नहीं चल रहा था... अगर आपके पास विज्ञान स्कूल नहीं हैं तो आपको मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेजों में प्रवेश कैसे मिलेगा। बता दें कि इससे पहले वे अहमदाबाद के साइंस सिटी में आयोजित एक रॉबोटिक प्रदर्शनी में शामिल भी हुए। इसके साथ ही उन्होंने वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट का उद्घाटन भी किया। रॉबोटिक प्रदर्शनी में पीएम मोदी ने वहां मौजूद कर्मचारियों से बातचीत भी की और वहां रखे सभी रोबोटिक चीजों का जायजा भी लिया।

इस्कॉन पर लगाए गए आरोप वीभत्स, ये किसी बड़े षड्यंत्र का संकेत, जवाब दें भाजपाई : अखिलेश

लखनऊ। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सबसे बड़े मंदिर संगठन कहे जाने वाले इस्कॉन पर लगाए गए आरोपों को वीभत्स करार दिया है और इस पर भाजपाइयों से जवाब मांगा है। उन्होंने सोशल मीडिया साइट एक्स (पहले ट्वटिर) पर कहा कि भाजपाइयों ने पहले भूमाफि यों से मिलकर राधास्वामी सत्संग को निशाना बनाया और भाजपा के लोग अब गोपालक भगवान कृष्ण के उपासकों पर ही कसाइयों को गाय बेचने का वीभत्स आरोप लगा रहे हैं। विश्वभर के इस्कॉन के अनुयायी इस आरोप से व्यथित और दुखी हैं। भाजपा सरकार को स्पष्टीकरण देना ही होगा क्योंकि इसका संबंध सिर्फ प्रदेश व देश से ही नहीं है बल्कि अंतरराष्ट्रीय छवि से भी है क्योंकि कृष्ण चेतना को समर्पित इस्कॉन का विस्तार सम्पूर्ण विश्व में है। जनता का सवाल ये है कि भाजपा के लोग किस वजह से समाज में ऐसा वैमनस्य फैलाना चाहते हैं और किसके कहने पर? इस्कॉन पर आरोप किसी बड़े षड्यंत्र का संकेत है। पूर्व केंद्रीय मंत्री मेनका गांधी का इस्कॉन को लेकर एक बयान सोशल मीडिया पर वायरल है। वीडियो में मेनका को कहते हुए सुना जा सकता है, 'भारत में इस समय सबसे बड़ा धोखेबाज इस्कॉन है।

दुनिया में विकास की भावना का पोषक है भारत प्रधानमंत्री मोदी ने खत्म की भेदभाव की भावना

गोरखपुर। मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने कहा कि दुनिया के अंदर विकास की भावना क्या होनी चाहिए, यह भारत ने ही दिया है। विगत नौ वर्षों से देश और दुनिया में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत इसी भावना का प्रतिनिधित्व भी कर रहा है। सीएम योगी युगपुरुष ब्राह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 54वीं एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की 9वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह के अंतर्गत आयोजित संगोष्ठी के क्रम में पहले दिन बुधवार को 'एक भारत श्रेष्ठ भारत की संकल्पना की आधारशिला' विषयक संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने कहा, एक भारत श्रेष्ठ भारत की संकल्पना के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश को एक संकल्प दिया। उत्तर से दक्षिण तक तथा पूर्व से पश्चिम तक एक भावना से सभी को संबल प्रदान किया। देश के 120 जनपद नक्सल प्रभावित थे, पूर्वोत्तर अराजकता से भरा था। पर, पीएम मोदी ने अपने नेतृत्व में भेदभाव की भावना को समाप्त कर, विकास की योजनाओं से जोड़कर इन सभी क्षेत्रों को विकास की धारा में ला दिया। कश्मीर हो या कन्याकुमारी, अरूणांचल हो या द्वारिकापुरी, सभी देशवासियों को सीधे विकास की परियोजनाओं से जोड़कर एक दूसरे राज्यों से परस्पर संबंध बनाकर, भारत को समानभाव से समझने का अवसर दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ने लाल किला से पंच प्रण का संकल्प लेकर देशवासियों को यह भाव दिया कि हमें एक विकसित भारत का निर्माण करना है। जो गुलामी के प्रतीक हैं, उनसे मुक्ति पाकर स्वदेशी पर गर्व करते हुए आत्मनिर्भर बनाना होगा। एक तरफ गुलामी के अंश पर विराम लगाना है तो दूसरी तरफ अपनी विरासत पर गौरव करना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह भारत देश ऐसा है जहा जन्म लेना दुर्लभ है, उसमें भी मनुष्य के रूप में जन्म लेना सौभाग्य की बात है। हमें अपने तीर्थ, धर्म ग्रंथ और संस्कृति पर गर्व करने के साथ हर नागरिक से समान व्यवहार करना चाहिए। साथ ही अपने कर्तव्यों के प्रति सभी को जागरूक रहना होगा। पीएम मोदी के पंच प्रण ने देश में एक भाव पैदा किया है जिससे हम सभी का दायित्व राष्ट्र प्रथम का ही गया है। सीएम योगी ने कहा कि ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज व ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज ने अपना पूरा जीवन भारत और भारतीयता के लिए समर्पित कर दिया। इन महापुरुषों के आदर्शों और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पंच प्रण को अपने दायित्व से जोड़कर हम सभी एक भारत श्रेष्ठ भारत की संकल्पना को सिद्ध करेंगे।

कुलियों से बातचीत का वीडियो शेयर कर राहुल बोले- दो वक्त की रोटी को संघर्ष कर रहा देश का नागरिक

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने बुधवार को बेरोजगारी और महंगाई के मुद्दों को उठाते हुए आनंद विहार रेलवे स्टेशन पर कुलियों के साथ अपनी हालिया बातचीत का एक वीडियो साझा किया। राहुल गांधी ने रेलवे स्टेशन पर कुलियों की समस्या सुनी थी। गांधी ने 21 सितंबर को आनंद विहार रेलवे स्टेशन पर कुलियों से बातचीत की थी और उनकी समस्याएं जानी थीं। पूर्व कांग्रेस प्रमुख ने बुधवार को कुलियों के साथ अपनी बातचीत का एक वीडियो साझा किया और कहा कि भले ही उनके पास कोई वेतन नहीं है, कोई पेंशन नहीं है, कोई स्वास्थ्य बीमा नहीं है और रेलवे से कोई सरकारी सुविधाएं नहीं हैं, लेकिन उन्हें उम्मीद है कि समय बदल जाएगा। राहुल गांधी ने कहा कि कुछ दिन पहले मेरी रामेश्वर जी (सब्जी विक्रेता) से मुलाकात हुई थी। इसकी खबर मिलते ही कुछ कुली भाइयों ने मुझसे मिलने का आग्रह किया। और मौका मिलते ही मैं दिल्ली के आनंद विहार टर्मिनल पहुंच गया।' मैं उनसे मिला और काफी देर तक बातचीत की, इस दौरान उनके जीवन को करीब से जाना और उनके संघर्षों को समझा। उन्होंने कहा कि कुली भारत के सबसे मेहनती लोगों में से हैं। पीढ़ी-दर-पीढ़ी, वे अपना जीवन लाखों यात्रियों की यात्रा में मदद करने में बिताते हैं। कई लोगों की बांह पर वह बैज सिर्फ एक पहचान नहीं है, यह उन्हें मिली विरासत भी है। यह उनके लिए जिम्मेदारी का हिस्सा है, लेकिन उनके लिए बहुत कम प्रगति हुई है। उन्होंने दावा किया, 'आज भारत में लाखों शिक्षित युवा रेलवे स्टेशनों पर कुली के रूप में काम करके अपनी आजीविका कमाने की कोशिश कर रहे हैं। कारण? रिकॉर्ड बेरोजगारी। देश का साक्षर नागरिक दो वक्त की रोटी जुटाने के लिए संघर्ष कर रहा हैं।'

मणिपुर के पहाड़ी इलाकों में अफस्पा की अवधि एक अक्तूबर से छह महीने के लिए बढ़ी, अधिसूचना जारी

नई दिल्ली। मणिपुर सरकार ने राज्य के पहाड़ी इलाकों में अफस्पा की अवधि एक अक्तूबर से छह महीने के लिए बढ़ा दी है। घाटी के 19 पुलिस स्टेशनों को इसमें शामिल नहीं किया गया। सरकार की तरफ से एक आधिकारिक अधिसूचना जारी कर इसकी जानकारी दी गई है। बुधवार को जारी एक आधिकारिक अधिसूचना में कहा गया है, "मणिपुर के राज्यपाल 19 पुलिस स्टेशनों के अधिकार क्षेत्र में आने वाले क्षेत्रों को छोड़कर पूरे मणिपुर राज्य को अशांत क्षेत्र' के रूप में घोषित करने की मंजूरी देते हैं। यह फैसला फिलहाल एक अक्तूबर 2023 से छह महीने की अवधि तक के लिए प्रभावी होगा।" जिन थाना क्षेत्रों में अशांत क्षेत्र अधिनियम लागू नहीं किया गया है, उनमें इंफाल, लाम्फेल, शहर, सिंगजामेई, सेकमई, लामसांग, पास्टल, वांगोई, पोरोम्पट, हीनगांग, लामलाई, इरिबुंग, लीमाखोंग, थौबल, बिष्णुपुर, नामबोल, मोइरांग, काकचिन और जिरबम शामिल हैं।

प्रयागराज की नाबालिग के साथ महाकाल की नगरी में निर्भया जैसा कांड, ढाई घंटे तक बिना कपड़ों के घूमती रही

उज्जैन। बाबा महाकाल की नगरी उज्जैन में दिल्ली के निर्भया कांड की तरह मामला सामने आया है। दुष्कर्म के बाद नाबालिग के प्राइवेट पार्ट्स को नुकसान पहुंचाया गया। दुष्कर्म के बाद बदमाशों ने नाबालिग को अर्द्धनग्न अवस्था में छोड़ दिया। वह ढाई घंटे तक बड़नगर रोड स्थित मुरलीपुरा इलाके में घर-घर गई लेकिन किसी ने मदद नहीं की। लड़की प्रयागराज की रहने वाली है। वह उज्जैन कैसे पहुंची, इसकी जांच की जा रही है। किसी ने डायल 100 पर सूचना दी और महाकाल थाना पुलिस ने उसकी मदद की और उसका चरक अस्पताल में मेडिकल कराया। ढाई घंटे तक नाबालिग यहां-वहां भटकती रही। भाषा अलग होने की वजह से कोई उसकी बात समझ नहीं सका। किसी ने मदद तक नहीं की। मेडिकल रिपोर्ट में नाबालिग के साथ दुष्कर्म की पुष्टि हुई। हालत गंभीर होने पर इंदौर के अस्पताल में रैफर किया गया है। अब उसकी हालत में सुधार है। इस घटना ने न सिर्फ बाबा महाकाल की नगरी को शर्मसार कर दिया है बल्कि पुलिसिया व्यवस्था पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। महाकाल थाना प्रभारी अजय वर्मा ने बताया कि सोमवार को सूचना मिली थी कि एक नाबालिग मुरलीपुरा क्षेत्र में अर्द्धनग्न हालत में घूम रही है। उसे तत्काल थाने लाया गया। वह कुछ भी बताने की स्थिति में नहीं थी। उसका मेडिकल कराया तो पता चला कि उसके साथ दुष्कर्म हुआ है। डॉक्टर के मुताबिक उसके प्राइवेट पार्ट्स में भी गंभीर चोटें थीं। उसे तत्काल उपचार के लिए इंदौर भेज दिया गया था। जब नाबालिग से घटना के बारे में जानने का प्रयास किया तो उसकी भाषा स्पष्ट नहीं हो रही थी। हालत इतने खराब थे कि पुलिस उससे सही तरीके से पूछताछ भी नहीं कर सकी। नाबालिग के साथ दुष्कर्म की पुष्टि होते ही पुलिस अधीक्षक सचिन शर्मा ने एसआईटी बनाई है। क्षेत्र के 400 से अधिक सीसीटीवी कैमरों के फुटेज देखकर इस मामले में तुरंत कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। सचिन शर्मा ने कहा कि मासूम के साथ निर्भया कांड जैसा कुछ किया गया है। मामले की हर बिंदु पर जांच की जा रही है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी देश की नहीं दोस्त की सरकार चला रहे : संजय सिंह

लखनऊ। विपक्षी गढ़बंधन आइएनडीआइए में शामिल आम आदमी पार्टी (आप) के कार्यकर्ता समागम में बतौर मुख्य अतिथि मौजूद पार्टी के यूपी प्रभारी संजय सिंह ने कहा कि केंद्र व राज्य सरकार की गलत नीतियों के खिलाफ अभियान चलाया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी देश की नहीं दोस्त की सरकार चला रहे हैं। आकाश से लेकर पाताल तक सभी काम अदाणी की कंपनी को दिया जा रहा है। अब एनडीए का मतलब न्यू डीलर आफ अदाणी है। मोदी ने हर साल दो करोड़ लोगों को नौकरी देने का वादा किया था। नौ साल में 18 करोड़ लोगों को नौकरी मिल जानी थी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वर्ष 2022 तक सभी गरीब लोगों को पक्का मकान मिल जाने का वादा भी पूरा नहीं हुआ। किसानों की आय भी डबल नहीं हुई। उत्तर प्रदेश में ट्रिपल इंजन की सरकार है। केंद्र से लेकर नगर निकाय तक भाजपा की सरकार है फिर भी जनता त्राहि त्राहि कर रही है। योगी सरकार कानून व्यवस्था बनाने में फेल साबित हो रही है। सीटों के बटवारे के मुद्दे पर कहा की अक्टूबर में यह फाइनल हो जाएगा। आइएनडीआइए ही देश एनडीए को सत्ता से बाहर करेगा।

सेना प्रमुखः हिंद-प्रशांत शांति-स्थिरता की वह नींव, जिस लाखों के सपने टिके, सम्मेलन में बोले मनोज पांडे

नई दिल्ली। हिंद-प्रशांत सेना प्रमुखों के सम्मेलन में सेना प्रमुख मनोज पांडे ने कहा कि इंडो-पैसिफिक में शांति और स्थिरता अमूर्त आदर्श नहीं हैं, बल्कि वे वह नींव हैं, जिस पर लाखों लोगों के सपने और आकांक्षाएं टिकी हुई हैं। भारतीय सेना इन आदर्शों के लिए प्रतिबद्ध है। यहां मैं भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर के बयानों को दोहराना चाहूंगा, जैसा कि उन्होंने कहा था , कि यह कहना कि खेल में हमारी पूरी ताकत है। मुझे लगता है कि आज यह सुनिश्चित करने में हमारे पास महत्वपूर्ण दांव हैं कि इंडो-पैसिफिक स्थिर है साथ ही यह सुरक्षित है, क्योंकि इसमें सहयोग और ध्यान सही चीजों पर दिया गया है। उन्होंने आगे कहा कि क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय सुरक्षा गतिशीलता, चुनौतियों, चिंताओं और आकांक्षाओं पर सामूहिक दृष्टिकोण उन महत्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाया है, जो प्रभावित करते हैं, योगदान देते हैं और अगर इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में शांति और स्थिरता हासिल करनी है तो उन पर ध्यान देने की जरूरत है। हमारे विचार-विमर्श के दौरान आप सभी ने जिस विश्वास को बढ़ावा दिया और निर्माण में मदद की, उसे मैं स्वीकार और उसकी सराहना करना चाहता हूं। हमने दावा किया है कि, हमारे भौगोलिक अलगाव के बावजूद, हम शांति और स्थिरता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता में एकजुट हैं। इधर, दिल्ली में इंडो-पैसिफिक आर्मीज चीफ्स कॉन्क्लेव (आईपीएसीसी) में यूनाइटेड स्टेट्स आर्मी पैसिफिक के कमांडिंग जनरल जनरल चार्ल्स ए फ्लिन ने कहा कि उनकी सेनाएं एक सुरक्षित और स्वतंत्र इंडो-पैसिफिक सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

केमिकल फैक्ट्री में लगी भीषण आग, आसमान में छाया धुएं का गुबार, आठ लोग झुलसे

मोहाली। पंजाब के मोहाली में चनालोन स्थित इंडस्ट्रियल फोकल प्वाइंट में एक केमिकल फैक्ट्री में भीषण आग लग गई। आग इतनी भयानक थी कि पूरी फैक्ट्री से काले धुएं का गुबार आसमान में फेल गया। फैक्ट्री में आग लगने भगदड़ मच गई। वहीं, इस भयंकर हादसे में आठ लोग झुलस गए हैं। आग लगने की सूचना मिलते ही दमकल की गाड़ियां मौके पर पहुंच गई। दमकल की 24 गाड़ियां घटनास्थल पर मौजूद हैं और आग बुझाने का प्रयास किया जा रहा है। फैक्ट्री में इतनी भयंकर आग कैसे लगी, अभी इन कारणों का खुलासा नहीं हो सका है। हादसे में घायल लोगों को तुरंत अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनका इलाज जारी है। मौके पर पहुंची पुलिस मामले की जांच पड़ताल कर रही है।

संपादकीय

हिंसा रोकने के साथ-साथ पीड़ित तबके को न्याय दिलाने के लिए सरकार को गंभीर होने की जरूरत

मणिपुर में मई महीने से अब तक जारी हिंसा को लेकर सरकार की ओर से उठाए गए कदम उसकी नाकामी ही दशार्ते हैं। ऐसी स्थिति में जमीनी स्तर पर जो समुदाय कमजोर पड़ता है, उसके प्रति अन्याय की स्थितियां मजबूत होती हैं। जबकि सरकार की मुख्य भूमिका कमजोर और उत्पीड़ित तबके की सुरक्षा करने की होनी चाहिए, मगर ऐसा लगता है कि न तो हिंसक गतिविधियों पर पूरी तरह रोक लगाने में कामयाबी मिल पा रही है और न ही न्याय सुनिश्चित करने के हालात बनाए जा रहे हैं। हालत यह है कि अदालतों तक पहुंचे मामलों पर सुनवाई में भी कई तरह की अड़चनें खड़ी हो रही हैं। हाल ही में आरोप लगे कि मणिपुर में एक विशेष समुदाय के वकीलों को उच्च न्यायालय में पेश होने की इजाजत नहीं दी गई। अगर ये आरोप सही हैं तो यह हिंसक गतिविधियों में लोगों के मारे जाने से लेकर संपत्तियों के नुकसान और लोगों के अपनी जगहों से उजड़ने के समांतर एक ऐसी स्थिति है, जिसमें पीड़ित तबकों के लिए न्याय के रास्ते भी बंद हो जाएंगे। इसी के मद्देनजर सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को हिंसा प्रभावित मणिपुर में बार एसोसिएशन के सदस्यों से यह सुनिश्चित करने को कहा कि राज्य में किसी भी वकील को अदालती कार्यवाही तक पहुंचने से न रोका जाए। अगर किसी को रोका गया तो यह अदालत के आदेश की अवमानना होगी। शीर्ष न्यायालय ने कहा कि यह अदालत लोगों के लिए है और मामले की सुनवाई करना उपचारात्मक प्रक्रिया का हिस्सा है। अदालत ने मणिपुर सरकार को भी यह सुनिश्चित करने को कहा कि राज्य के सभी नौ न्यायिक जिलों में वीडियो कान्फ्रेंसिंग की सुविधाएं स्थापित की जाएं, ताकि कोई वकील या वादी डिजिटल माध्यम से हाई कोर्ट के समक्ष उपस्थित होने का इच्छुक हो, तो वह न्यायालय को संबोधित कर सके। हालांकि मणिपुर सरकार की ओर से कहा गया कि अदालत में पेश होने से किसी को नहीं रोका जा रहा है। लेकिन अगर ऐसे आरोप सामने आए हैं और उनका कहीं भी कोई आधार है तो निश्चित रूप से यह न्याय की अवधारणा को बाधित करेगा। शायद यही वजह है कि सुप्रीम कोर्ट ने अगली बार अपने समक्ष नमूना आदेश का संकलन भी पेश करने को कहा, जिससे पता चल सके कि सभी समुदायों के वकील उच्च न्यायालय में पेश हुए। विडंबना है कि मणिपुर में मैतेई और कुकी समुदायों के बीच हिंसा की शुरूआत के अब पांच महीने होने को आए, लेकिन इससे जुड़ी बुनियादी समस्या पर विचार या बातचीत की गुंजाइश निकालने की तो दूर, अब तक हिंसा की घटनाओं को भी नहीं रोका जा सका है। अब भी वहां से अक्सर ऐसी खबरें आ रही हैं, जिनमें किसी खास समुदाय के लोगों को चिह्नित करके उनके इलाकों पर हमला किया जाता है। राज्य स्तरीय सुरक्षा तंत्र और सेना की तैनाती के बावजूद इतने लंबे वक्त से जारी हिंसा और उसके बाद अब अदालती प्रक्रिया में न्याय की मांग तक पीड़ितों की पहुंच बाधित किए जाने की खबरें यह बताने के लिए काफी हैं कि मणिपुर सरकार शिद्दत से काम नहीं कर रही है। दूसरी ओर, इस मसले पर शांति समिति और निगरानी समिति के गठन के बावजूद अब तक कोई सकारात्मक नतीजा सामने नहीं आ सका है। इस बात की तत्काल जरूरत है कि हिंसा रोकने के साथ-साथ पीड़ित तबके को न्याय दिलाने को लेकर सरकार गंभीर हो।

ना कांपे जुबान!

फायदे की खातिर ।
देते गलत बयान ।।
करके ऐसा उनकी ।
ना कांपे जुबान ।।
हैं जनता के सेवक ।
पर कैसा संदेश ?
उछल उछल कर खूब ।
दे रहे उपदेश ।।
है लगाम जरूरी ।
स्वाद भी चखाना ।।
आया कैसा काल ।
कब लेंगे हर्जाना ।।
बार-बार ये इस तरह ।
क्यों रहे कुरेद ?
रहता दिल में काला ।
पहने पर सफेद ।।

-कृष्णेन्द्र राय

महिला आरक्षण बनाम ओबीसीः भाजपा और कांग्रेस में से किसका सफल होगा दांव?

संतोष पाठक

महिला आरक्षण बिल की सुगबुगाहट के साथ ही कांग्रेस ने ओबीसी राग आलापना शुरू कर दिया था। लोकसभा में विपक्षी दलों की पहली स्पीकर के तौर पर बोलते हुए कांग्रेस की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी ने महिला आरक्षण को अपने पति और देश के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी का सपना बताने के साथ-साथ भारत सरकार से जाति जनगणना करा कर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और ओबीसी अर्थात अन्य पिछड़ा वर्ग की महिलाओं को भी आरक्षण देकर आगे बढ़ाने की मांग की। हालांकि कोटे के अंदर कोटे की नीति के तहत सरकार ने अपने महिला आरक्षण बिल में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए पहले से आरक्षित सीटों में से 33 प्रतिशत सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित करने का प्रस्ताव शामिल कर रखा है लेकिन ओबीसी समुदाय की महिलाओं को आरक्षण देने पर सरकार का तर्क बिल्कुल साफ है कि अभी संविधान में सामान्य वर्ग के साथ-साथ सिर्फ अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षण का प्रावधान है इसलिए इससे अलग हटकर कोई व्यवस्था फिलहाल नहीं की जा सकती है।

दरअसल, सच्चाई यह है कि भाजपा और कांग्रेस दोनों ही राजनीतिक दल महिला मतदाताओं के साथ-साथ ओबीसी वोटरों का महत्व बखूबी समझते हैं। यह भी एक सर्वविदित तथ्य है कि आमतौर पर महिला वोटर जातियों की सीमा से परे जाकर अन्य मुद्दों पर वोट करते हैं यानी महिला वोटर ईवीएम का बटन दबाते समय पुरुष वोटरों की तरह सिर्फ जाति के बारे में ही नहीं सोचते हैं। इसलिए भाजपा ने महिला वोटरों को लेकर एक बड़ा दांव खेल दिया है। भाजपा को यह लगता है कि ओबीसी समुदाय को उन्होंने अब तक बहुत कुछ दिया है और आने वाले दिनों में भी उनके पास देने को बहुत कुछ है। भाजपा को यह भी लग रहा है कि अगर महिला आरक्षण बिल पास करवाने का दांव सही से चल गया तो देश के चुनावी इतिहास में भाजपा न केवल अपना रिकार्ड तोड़ सकती है बल्कि 1984 के राजीव गांधी के रिकार्ड को भी पार कर सकती है। इसलिए भाजपा आने वाले दिनों में जोर-शोर से महिला आरक्षण बिल को लेकर देश की मतदाताओं के पास जाने के लिए बड़ा अभियान चलाने जा रही है।

दूसरी तरफ, नरेंद्र मोदी को 2024 में किसी भी कीमत पर हराने के लिए बेताब कांग्रेस महिला वोटरों के साथ-साथ ओबीसी वोटरों पर भी दांव खेलने का प्रयास कर रही है। हालांकि यह लड़ाई कांग्रेस से ज्यादा उसके आरजेडी और सपा जैसे सहयोगी दलों की ज्यादा लग रही है। देश के महिला वोटरों और प्रभावशाली ओबीसी तबको को छोड़ कर ओबीसी समुदाय से ताल्लुक रखने वाले अन्य जातियों में भाजपा खासकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रभाव को देखते हुए कांग्रेस के रणनीतिकारों का यह लग रहा है कि इसमें सेंध लगाए बिना मोदी को हराना नामुकिन है इसलिए कांग्रेस ने एक साथ कई स्तरों पर अभियान छेड़ दिया है। राहुल गांधी और कांग्रेस के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे लगातार यह कह रहे हैं कि सत्ता में आते ही वह तत्काल प्रभाव से महिला आरक्षण को लागू कर देंगे और साथ ही जाति जनगणना करवा कर ओबीसी समुदाय के लिए आरक्षण का रास्ता भी खोलेंगे। जाहिर है कि एक तरफ भाजपा है जिसे महिला आरक्षण के अपने दांव पर पूरा भरोसा है तो दूसरी तरफ कांग्रेस है जो महिला वोटरों को लुभाने के साथ ही जाति जनगणना की मांग के जरिए ओबीसी वोटरों पर ज्यादा फोकस कर रही है। ऐसे में फिलहाल तो भाजपा और कांग्रेस की यह चुनावी जंग महिला आरक्षण बनाम ओबीसी के दांव में ही बदलती हुई ज्यादा नजर आ रही है।

क्या कनाड़ा की धरती पर बनेगा खालिस्तान?

अशोक मधुप

कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो भारत में खालिस्तान बनाने की मांग करने वाले अतिवादियों पर पूरी तरह मेहरबान है। भारत द्वारा इन अतिवादियों के बारे में दी गई जानकारी पर वे कुछ कार्रवाई नहीं कर रहे, अपितु भारत पर ही आरोप लगा रहे हैं कि भारत से फरार अपराधी खालिस्तानी अतिवादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में उसके राजनयिक का हाथ है। भारत को चाहिए कि यह कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो को भारत के खालिस्तान का समर्थन करने वाले अतिवादियों का समर्थन करने दें। कुछ समय ऐसा ही चलने दें। हां सार्वजनिक रूप से भारत उसे चेतावनी देने का सिलसिला जारी रखें। अपने यहां खालिस्तान समर्थकों पर सख्ती रखें। कुछ समय ऐसा ही चलता रहा तो यह निश्चित है कि अब खालिस्तान भारत में नहीं कनाडा में बनेगा। कनाडा की धरती पर बनेगा। आज जो कनाड़ा कर रहा है, कभी वही भारत के कुछ नेताओं ने किया था। वह पंजाब में खालिस्तान की बढ़ती गतिविधियों को नजर अंदाज करते रहे। परिणाम स्वरूप पजांब में रहने वाले हिंदुओं को पंजाब छोड़ने के लिए कहा जाने लगा। उन पर हमले होने शुरू हो गए। सिख आंतकवाद पंजाब में ही नही बढ़ा, अपितु उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र को भी उसने अपनी चपेट में लेना शुरू कर दिया। इस दौरान पंजाब में धार्मिक नेता भिंडरावाला तेजी से लोकप्रिय होने लगे। कहा जाता है कि राजनैतिक लाभ के लिए केंद्र की तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने उसे प्रश्य देना शुरू कर दिया। हालत यह हुई कि वहीं भिंडरावाला कांग्रेस के लिए भस्मासुर साबित हुआ। उसने स्वर्ण मंदिर में डेरा जमा लिया। मजबूरन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को भिंडरावाला को स्वर्ण मंदिर से निकालने के लिए फौज का सहारा लेना पड़ा। बाद में उनके ही दो सुरक्षा गार्ड ने उनकी हत्या कर दी। आज जो कनाडा में हो रहा है, वह 40 साल से खालिस्तान समर्थकों को पोषित किए जाने का परिणाम है। कनाडा में खालिस्तान समर्थक आंदोलन पिछली सदी के आठवें दशक में शुरू हो गया था। पियरे ट्रूडो के प्रधानमंत्री बनने के बाद इसकी जड़ें गहरी हुईं। उनके कार्यकाल के दौरान ही तलविंदर परमार भारत में चार पुलिसकर्मियों की हत्या करने के बाद कनाडा भाग गया था। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने जून 1973 में कनाडा की यात्रा की थी और पियरे ट्रूडो के साथ उनके व्यक्तिगत संबंध सौहार्दपूर्ण थे। लेकिन, पियरे ट्रूडो ने 1982 में तलविंदर परमार को भारत प्रत्यर्पित करने का अनुरोध ठुकरा दिया। इसके लिए बहाना बनाया गया कि भारत का रुख महारानी के प्रति पर्याप्त रूप से सम्मानजनक नहीं है। पियरे ट्रूडो के पद छोड़ने के ठीक एक साल बाद तलविंदर परमार ने जून 1985 में एयर इंडिया की फ्लाइट 182 (कनिष्क) में बम विस्फोट की साजिश रची, जिसमें विमान में सवार सभी 329 लोग मारे गए। हालाकि मरने वालों मे अधिकतर कनाडा के ही नागरिक थे।इस विमान हादसे में कुछ तो पूरे परिवार ही खत्म हो गए। अगर पियरे ट्रूडो ने तलविंदर परमार को भारत प्रत्यर्पित करने का इंदिरा गांधी का अनुरोध मान लिया होता, तो कनिष्क विमान में विस्फोट नहीं हुआ होता। भारतीय-कनाडाई राजनीति के जानकार मानने लगे हैं कि जो गलती पियरे ट्रूडो ने तब की थी, वहीं उनके बेटे जस्टिन ट्रूडो भी आज कर रहे हैं। अपनी सरकार चलाने के लिए कनाडा में खालिस्तान समर्थक उग्रवादियों के प्रति सहानुभूति रखकर वही गलती कर रहे हैं। कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने भारत के ऊपर बेबुनियाद आरोप लगाकर कनाडा में पल रहे खालिस्तानी समर्थकों को हवा दे दी है। प्रधानमंत्री के इन आरोपों के बाद कनाडा के अलग-अलग राज्यों में खालिस्तान समर्थकों ने ऐसी साजिश रचनी शुरू कर दी जिससे वहां रह रहे न सिर्फ भारतीयों बल्कि डिप्लोमेट्स और भारतीय दूतावास के लिए बड़ा खतरा पैदा हो गया है बल्कि कनाडा में बसे भारतीय हिंदुओं को भी खतरा बनेगा। खालिस्तानी समर्थकों ने 25 सितंबर को कनाडा के हाईकमीशन और सभी काउंसलेट के बाहर बड़े प्रदर्शन की तैयारी की है। खुफिया एजेंसी को मिले इनपुट के आधार पर पता चला है कि ब्रिटिश कोलंबिया के सरे स्थित गुरुद्वारे में काउंसिल के कुछ सदस्यों ने इसे लेकर साजिश रची है। जानकारी यह भी है कि इस पूरे प्रदर्शन में कनाडा के कई पूर्व सांसद, नेता और कुछ चरमपंथी और खालिस्तान समर्थक इस मामले पर खतरनाक मंसूबों के साथ आगे बढ़ रहे हैं।रक्षा मामलों के विशेषज्ञों का मानना है कि कनाडा की जमीन पर पहले से ही खालिस्तान समर्थकों को कनाडा की सरकार प्रश्रय देती आई है। यही वजह है कि कनाडा सरकार के समर्थन के चलते भारत विरोधी गतिविधियां इस देश के अलग-अलग हिस्सों में लगातार चलती रहती हैं। बीते कुछ समय में खालिस्तान जनमत संग्रह के नाम पर कनाडा की सरकार न सिर्फ इन भारत विरोधी खालिस्तानियों को सुरक्षा मुहैया कराती आई है बल्कि कार्यक्रम स्थलों की भी उपलब्ध करवाती आई है। पिछले दिनों एक शोभा यात्रा में पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या की झांकी निकालना भी इसी कड़ी का हिस्सा है। जानकारों का मानना है कि जिस तरीके से कनाडा के प्रधानमंत्री ने भारत के ऊपर बेबुनियाद आरोप लगाया है उसका असर अगले कुछ दिनों में ही बहुत तेजी से दिखाना शुरू हो सकता है। विदेशी मामलों की जानकार मानते हैं कि कनाडा सरकार का भारत के लिए लिया गया एक्शन आने वाले दिनों में भारत और कनाडा के रिश्तों पर भी बड़ा असर डालने वाला है।

कनाडा के प्रधानमंत्री के बयान के बाद के हालात में क्रम में सिख फॉर जस्टिस के नेता गुरपतवंत सिंह पन्नू की ओर से हिंदू समुदाय को धमकी दी गई है। एसएफजे के पन्नू ने कनाडा के हिंदुओं को धमकी दी है। पन्नू ने उन्हें कनाडा छोड़ने के लिए कहा है। खालिस्तानी अलगाववादी सरगना ने कनाडा में सिखों से वैंकूवर में 29 अक्टूबर को होने वाले तथाकथित जनमत संग्रह में वोट डालने की भी अपील की। जो पन्नू ने कनाड़ा के हिंदुओं से कहा है, ऐसा ही कभी पंजाब में आंतकवाद की शुरूआत में कहा गया था। फिर उनपर हमले शुरू हो गए थे। कनाडा में धमकी से पहले ही हिंदुओं पर हमले होने लगे हैं। इन धमकियों को लेकर कनाडा में भारतीय मूल के सांसद चंद्र आर्य ने एक न्यूज चैनल के साथ इंटरव्यू में कहा कि कनाडा में खालिस्तानी समूहों से बढ़ते खतरों के मद्देनजर अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय भयभीत है। कनाडा में हिंदू लोगों की सुरक्षा को लेकर गंभीर चिंताएं हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो के सरे में खालिस्तानी आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारत सरकार के शामिल होने के दावे के बाद कनाडा में हिंदू लोगों के खिलाफ धमकियों की निंदा की। इंटरव्यू के दौरान आर्य ने कनाडाई टिप्पणीकार एंड्रयू कॉइन के कॉलम का हवाला दिया।

जी20 शिखर सम्मेलन में भारत को मिली बड़ी कामयाबी को जस्टिन ट्रूडो पचा नहीं पाये

योगेंद्र योगी

कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने आरोप लगाया है कि सिख नेता हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के पीछे भारत सरकार हो सकती है। केन्द्र सरकार निज्जर की हत्या के आरोपों को खारिज करती रही है। निज्जर की हत्या में भारत की भूमिका की जांच के मद्देनजर कनाडा ने भारत के शीर्ष राजनयिक को भी निष्कासित कर दिया। भारत ने भी जवाबी कार्रवाई में दिल्ली स्थित कनाडाई उच्चायोग को समन भेजा और एक सीनियर डिप्लोमैट को निष्कासित करने का फैसला किया है। दरअसल जी20 की बैठक के दौरान भारत को मिली वैश्विक स्तर पर सफलता को कनाड़ा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो पचा नहीं पाए।

खालिस्तानी अतिवादियों को समर्थन देने के आरोप ट्रूडो सरकार पर पहले भी लगते रहे हैं। भारत की तरफ से कनाडा को बाकायदा दस्तावेज तक मुहैया कराए गए हैं। इसमें खालिस्तान समर्थक सहित खतरनाक अपराधी भी शामिल हैं। इसके बावजूद कनाडा सरकार आजादी की अभिव्यक्ति की आड़ में वोटों की क्षुद्र राजनीति से उबर नहीं सकी। प्रधानमंत्री ट्रूडो के संकीर्ण नजरिए में कोई बदलाव नहीं आया। नए घटनाक्रम से ट्रूडो अब पश्चिमी देशों से मदद की दुहाई मांग रहे हैं। जबकि अमेरीका और यूरोपीय यूनियन इस मसले पर बहुत सधी हुई प्रतिक्रिया दे रहे हैं। पश्चिमी जगत भी ट्रूडो सरकार की

खालिस्तानियों के सरेआम समर्थन को बखूबी समझता है। अमेरिका सहित पश्चिमी मुल्क जब किसी तरह के आतंकवाद के समर्थन नहीं करने का दंभ भरते हैं, तब उसमें कनाडा का परोक्ष तौर पर खालिस्तान को समर्थन देना भी है। गौरतलब है कि ट्रूडो जी-20 सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए भारत आए थे। इस दौरे में ट्रूडो के साथ मुलाकात में पीएम मोदी ने कनाडा में सिख अलगाववादी गतिविधियों और भारतीय राजनयिकों पर होते हमलों का मुद्दा उठाया था। भारत इस मुद्दे को पहले भी कई बार उठा चुका है। ट्रूडो के मुल्क लौटने के कुछ दिनों बाद ही कनाडा ने एक तरफा मनमाना निर्णय लेते हुए भारत से द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौते पर बातचीत रोक दी। भारत ने ट्रूडो सरकार द्वारा लगाए गए आरोपों को पूरी तरह से खारिज कर दिया। भारत के विदेश मंत्रालय ने कहा कि भारत सरकार पर शामिल होने का आरोप लगाना हास्यास्पद और राजनीति से प्रेरित है। इसी तरह हमारे प्रधानमंत्री के सामने कनाडा के प्रधानमंत्री ने आरोप लगाए थे और हमने उसे भी पूरी तरह से खारिज किया था। हम कानून के राज को लेकर लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध हैं। भारतीय विदेश मंत्रालय ने कहा कि ऐसे बेबुनियाद आरोप खालिस्तानी आतंकवादी और अतिवादियों से ध्यान भटकाने के लिए हैं। ऐसे खालिस्तानी आतंकवादियों और अतिवादियों को कनाडा ने प्रश्रय दे रखा है, जो भारत की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के लिए खतरा हैं। कनाडा के नेता ऐसे तत्वों से खुलेआम सहानुभूति जता रहे हैं और ये हमारे लिए गंभीर चिंता का विषय है।

कनाडा और भारत के संबंधों में आया बदलाव अमेरीकी बाइडन प्रशासन के लिए मुश्किल की घड़ी है। अगर अमेरिका कनाडा का साथ देता है तो उसकी भारत के साथ वफादारी पर सवाल उठेंगे। अगर अमेरिका भारत का साथ देता है तो वो अपने नाटो सहयोगी कनाडा के खिलाफ जा रहा है। चीन का मुकाबला करने के लिए भारत का साथ देने की खातिर अमेरिका किसी भी विवाद में पड़ने से बचेगा। आश्चर्य की बात यह है कि कनाडा एक तरफ निज्जर मामले को अपनी संप्रभुता पर हमला बता कर पश्चिमी देशों से सहानुभूति बटोरने का प्रयास कर रहा है, वहीं सरेआम आतंकी गतिविधियों को प्रोत्साहित करके भारत की संप्रभुता से खिलवाड़ कर रहा है। भारत के प्रति कनाडा की इस दोमुही नीति को विश्व के अन्य देश भी बखूबी समझते हैं।

गौरतलब है कि खालिस्तान समर्थकों ने इंदिरा गांधी की हत्या को दशार्ते हुए पुतले की रैली निकाली थी। पूरे विश्व ने देखा था कि किस तरह कनाडा सरकार आतंक को प्रोत्साहित करने वाली गतिविधियों से मुंह फेरे हुए है। इसका भारत ने कड़ा प्रतिवाद किया था, किन्तु इसमें कनाडा को भारत की संप्रभुता पर अनाधिकृत दखल नजर नहीं आया। यह निश्चित है कि इस मुद्दे को कनाडा यदि कूटनीति के जरिए नहीं सुलझाता तो आर्थिक नुकसान कनाडा का ही होगा। साल 2022 में भारत कनाडा का दसवां बड़ा ट्रेडिंग पार्टनर था। 2022-23 में भारत ने कनाडा को 4.10 अरब डॉलर का सामान निर्यात किया था। 2021-22 में यह आंकड़ा 3.76 अरब डॉलर का था। वहीं कनाडा ने भारत को 2022-23 में 4.05 अरब डॉलर का सामान निर्यात किया। 2021-22 में ये आंकड़ा 3.13 अरब डॉलर का था। इन आंकड़ों से जाहिर है कि कनाडा का भारत के साथ आयात कम और निर्यात अधिक है। द्विपक्षीय संबंध बिगड़ने की सूरत में कनाड़ा को इसका आर्थिक खामियाजा भी भुगतना पड़ सकता है।

विश्व पर्यटन दिवस पर शैक्षणिक भ्रमण को जिला पंचायत अध्यक्ष ने दिखाई हरी झंडी

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर जिला पर्यटन एवं संस्कृति परिषद के द्वारा युवा पर्यटन क्लब के सदस्यो हेतु शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन रायफल क्लब परिसर से किया गया। जिसमें जनपद के विभिन्न विद्यालयो के कक्षा 07 से स्नातक तक के छात्र-छात्राओ को जनपद के विभिन्न ऐतिहासिक स्थलो का भ्रमण कराकर उसकी ऐतिहासिकता के बारे में विस्तापरपूर्वक जानकारी दी गयी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष सपना सिंह ने वाहन को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया जो रायफल क्लब से होते हुए जमानियां स्थित लठियां स्तम्भ, सैदपुर भीतरी एवं लार्ड कार्नवालिस का मकबरा पहुचा जहां उन्हे इसके इतिहास के बारे मे विस्तृत जानकारी दी गयी। शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम जिला पर्यटन अधिकारी दिव्या तिवारी के देख रेख में सम्पन्न हुआ। इस

अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष सपना सिंह ने कहा कि विश्व पर्यटन दिवस के अवसर सातवी से लेकर स्नातक के चयनित बच्चो को जनपद के विभिन्न ऐतिहासिक स्थलो का भ्रमण कराकर उसके बारे बताया जायेगा इसके अतिरिक्त कोशिश रहेगी कि बच्चो को जनपद के बाहर के जिलो के ऐतिहासिक स्थलो का भी भ्रणम कराया जाये जिससे छात्र-छात्राए अपने देश, प्रदेश के इतिहास बारे मे जान सके। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी संतोष कुमार वैश्य, जिला पर्यटन अधिकारी दिव्या तिवारी, सूचना अधिकारी राकेश कुमार एवं विद्यालयो के शिक्षकगण उपस्थित रहे।

स्पेल बी प्रतियोगिता में छात्रों ने दिखाई प्रतिभा

प्रखर वाराणसी। जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान सारनाथ में बुधवार को जनपद स्तरीय स्पेल बी श्रुतलेख प्रतियोगिता आयोजित की गई। बच्चों में शब्द लेखन में शुद्धता और लेखन कार्य में गति के कौशल के उद्देश्य से आयोजित प्रतियोगिता में जनपद के सभी आठ विकास खण्ड एवं नगर क्षेत्र के विद्यालयों के 39 छात्र छात्राओं ने प्रतिभाग किया। दो वर्गों में हुई प्रतियोगिता में प्राथमिक स्तर पर कक्षा 3 से 5 के छात्रों के लिए एवं पूर्व माध्यमिक स्तर पर कक्षा 6 से 8 तक के छात्रों के लिए हुई। प्रतियोगिता मे बच्चों को हिंदी के 20 शब्दों को श्रुत लेख के रूप में लिखने के लिए दिया गया तथा अंग्रेजी में लिखे गए 10 शब्दों में रिक्त स्थान को भरकर शब्द को पूरा करना था। प्रतियोगिता में प्राथमिक स्तर पर प्राथमिक विद्यालय पतेरवा की प्रगति पाल प्रथम स्थान तथा द्वितीय स्थान पर कंपोजिट विद्यालय बेसहूपुर सेवापुरी के आयुष्मान पाठक तथा तृतीय स्थान पर प्राथमिक विद्यालय वीरभानपुर आराजी लाइन की अंजलि रही। उच्च प्राथमिक स्तर पर पूर्व माध्यमिक विद्यालय लोहता काशी विद्यापीठ की शायमा प्रथम स्थान, पूर्व माध्यमिक विद्यालय दौलतिया सेवापुरी के शनि शुक्ला द्वितीय स्थान पर तथा तृतीय स्थान पर कंपोजिट विद्यालय हरहुआ की दिशा सिंह रही। दौरान डायट प्रवक्ता डॉ हरगोविंद पुरी, अरविंद कुमार सिंह, अनुराग सिंह और राजकुमार सिंह एवं विभिन्न विद्यालयों से आये शिक्षक व अभिभावक उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

प्रबंधक के पुत्रबधू का निधन, विद्यालय में शोक

प्रखर पिंडरा वाराणसी। श्री देवमूर्ति शर्मा इंटर कॉलेज के प्रबंधक देवब्रत शर्मा के पुत्रवधु सोनम राय 50 वर्ष के निधन पर बुधवार को विद्यालय शोक में बन्द रहा। पूर्व प्रबन्धक अभयकांत राय की पत्नी सोनम राय लिवर की बीमारी से जूझ रही थी। उनके निधन पर विद्यालय में प्रधानाचार्य विद्या सागर राय की अध्यक्षता में शोक सभा हुई और दो मिनट का मौन रख शिक्षकों और छात्राओ ने श्रद्धांजलि दी। उसके बाद विद्यालय शोक में बन्द कर दिया गया।

भाजपा काशी क्षेत्र मीडिया संयोजक का भव्य स्वागत, पीयूष गुप्ता ने धूमधाम से मनाया जन्मदिन

प्रखर रामनगर वाराणसी। भाजपा मीडिया सम्पर्क विभाग काशी क्षेत्र के संयोजक सत्येंद्र सिंह पिंटू जी के आवास पर पहुंच कर पीयूष गुप्ता के नेतृत्व में भव्य स्वागत किया गया। केक काटकर मनाया जन्मदिन। पीयूष गुप्ता ने नेता जी को लंबी उम्र की कामना की मौके पर पीयूष गुप्ता, प्रकाश गुप्ता, संजय गुप्ता, सुजल गुप्ता, शाहिद खान, हेमंत केसरी, अमित कुमार शालू खान,उपस्थित थे।अन्त में सत्येंद्र सिंह ने लोगों के प्रति आभार प्रकट किया।

भारत विकास परिषद शिवा शाखा द्वारा हर्षोउल्लास के साथ उल्लासित तीज उत्सव का आयोजन

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। दुगाकुंड स्थित हनुमान प्रसाद पोद्दार अंध विद्यालय के प्रेक्षागृह में भारत विकास परिषद शिवा शाखा द्वारा उल्लासित तीज उत्सव का आयोजन किया गया ,यह आयोजन चांद की थीम पर आधारित रहा जिसमें भारत विकास परिषद परिवार की महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सेदारी की` कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्वलन भारत माता और विवेकानंद के चित्र पर पुष्पांजलि के साथ हुआ तत्पश्चात वंदे मातरम और फिर शुरू हुआ रंगारंग कार्यक्रमों का सिलसिला जिसमें कजरी, शिव गीत, नृत्य, गणेश वंदना और अनेक कार्यक्रम जिसे दर्शकों की अंत तक तालियां बटोरी कार्यक्रम का संचालन रितु गुप्ता और शालिनी गुप्ता ने किया धन्यवाद प्रकाश कार्यक्रम संयोजक गीता अग्रवाल ने किया` कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती शांति देवी रूंगटा ने विश्व में शांति और सबके आनंद की कामना की शिव शाखा के अध्यक्ष मोहन रौनियार ने अतिथियों का स्वागत किया` इस अवसर पर मुख्य रूप से प्रदीप कुमार, अनूप अग्रवाल, अरुण अस्थाना, कौशलपती शर्मा, तारा शर्मा, नीलम रौनियार ,रजनी चौरसिया, प्रतिभा तिवारी, आशा कोठारी, सविता पोद्दार, सयोगिता साहू, निशा ,लीला , शालिनी , लता रानी अग्रवाल, प्रगति अग्रवाल ,पूनम मिश्रा सहित अनेक प्रांत के प्रतिनिधि एवं वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित रहे।

राजस्व और पुलिस की मौजूदगी में पुलिस चौकी की भूमि चिन्हित कार्य शुरू

प्रखर सहजनवा गोरखपुर। हरपुर बुदहट थाना क्षेत्र के चाँदपार में पुलिस चौकी के निर्माण में भूमि विवाद को लेकर कार्य रुका हुआ था। वही एक व्यक्ति ने प्रशासन पर जबरजस्ती मकान ध्वस्त कराने का आरोप लगाते हुए मंडलायुक्त से शिकायत दर्ज कराया था। मामले को संज्ञान में लेते हुए मंडलायुक्त ने एसडीएम से जांच कर मामले का निस्तारण कराने का निर्देश दिये थे। बुधवार को नायब तहसीलदार सहजनवा भान प्रताप सिंह,लेखपाल संजय वर्मा, राजीव कुमार पुलिस बल के साथ मौके पर पहुचे। आराजी नम्बर 82 का चिन्हाकन किया। इसके बाद कार्य शुरू करा दिया गया। इस दौरान एसओ महेंद्रनाथ मिश्र एसआई प्रवीण कुमार सहित अनेक पुलिस कर्मी मौजूद थे।

घर से किशोरी अचानक लापता केस दर्ज

प्रखर सहजनवा, गोरखपुर। गीडा थाना क्षेत्र के गाडर में एक 15 सितंबर को रात्रि में 8बजे एक 15 वर्षीय किशोरी घर से निकली और वापस नही लौटी। खोजबीन के बाद भी पता नही चला। पड़ोस के गावँ के युवक के घर पर भी पता लगाया गया लेकिन नही मिली। इसके पूर्व युवक किशोरी को तीन बार भगा चुका था। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने गुमशुदगी का केस दर्ज कर लिया है। उक्त सन्दर्भ में बात करने पर थाना प्रभारी गीड़ा ने बताया युवती के गायब होने के मामला दर्ज है। आगे कि कार्यवाही कि जा रही हैं।

समाजसेवी विनीत सेठ ने चांदी का स्मृति चिन्ह देकर किया मरकजी सीरत कमेटी के सदर का स्वागत

प्रखर जौनपुर। आगामी त्यौहार भाई चारे का प्रतिक हजरत मोहम्मद के जन्मोत्सव जश्ने ईद मिलाद उन नबी के मौके पर शहर की अग्रणी संस्था मरकजी सीरत कमेटी के अध्यक्ष शौकत अली मुन्ना और उनकी टीम का स्वागत शहर के गहना कोठी के अधिष्ठाता समाजसेवी विनीत सेठ ने एक चांदी का स्मृति चिन्ह देकर कमेटी का मान बढ़ाया है। इस मौके पर उन्होंने कहा कि यह शहर अमन का शहर है यहां पर सभी त्यौहार सभी समुदाय के लोग आपस में मिलकर जुलकर मनाते हैं और मनाते रहेंगे।इस मौके पर रियाजुल हक,जफर मसूद,मुमताज रेडियोज आदि लोग मौजूद रहे।

सहायक खाद्य आयुक्त की छापेमार कार्यवाही जारी, सदर क्षेत्र में की गई सैम्पलिंग

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। बुधवार को जिलाधिकारी आर्यका अखौरी के आदेश पर आर0सी0 पाण्डेय सहायक आयुक्त खाद्य गाजीपुर के निर्देशन में अभियान चलाकर गाजीपुर नगर पालिका परिषद क्षेत्र से कुल 02 नमूना संग्रहित किया गया, जिसके अनुसार मालगोदाम रोड रोडवेज बस स्टैण्ड, न0पा0प0 गाजीपुर स्थित फर्म मेसर्स ए0एस0 इण्टरप्राईजेज अमित कुमार वर्मा के प्रतिष्ठान से दही शुद्ध ब्राण्ड का 01 नमूना, मिश्रबाजार तिराहा, न0पा0प0 गाजीपुर स्थित संजय गुप्ता के प्रतिष्ठान से पनीर का 01 नमूना, संग्रहित नमूनें खाद्य विश्लेषक प्रयोगशाला, उ0प्र0 प्रेषित किये जा रहें है, जॉच रिपोर्ट प्राप्त होने के पश्चात खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम-2006 के अन्तर्गत विधिक कार्यवाही की जायेगी। नमूना संग्रह की कार्यवाही आर0पी0 सिंह,

मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी गाजीपुर के नेतृत्व में खाद्य सुरक्षा अधिकारियों अवधेश कुमार एवं गोपाल चन्द, की टीम द्वारा की गयी।

दरवाजे के सामने बंधी भैस चोरी केस दर्ज

प्रखर सहजनवा, गोरखपुर। गीडा थाना क्षेत्र के रानीपुर में दरवाजे पर बंधी भैस को चोर चुरा ले गये थे। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने अज्ञात चोरों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। मिली जानकारी से गीडा. थाना क्षेत्र के रानीपुर निवासी रघुनाथ यादव पुत्र देवकी यादव 29 अगस्त को घर से करीब 500 मीटर दूर रात्रि में खेत मे पानी चला रहा था। परिजन घर मे थे। भैस दरवाजे के सामने बंधी थी। रात्रि में ही चोर भैस को चुरा ले गये। खोजबीन के बाद भी पता नही चला। भैस की कीमत करीब एक लाख रुपया बताया जा रहा है। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने अज्ञात चोरों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है।

सूर्यांश प्रकाश सिंह बने ओलंपिक संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष

प्रखर जौनपुर। उत्तर प्रदेश ओलंपिक एसोसिएशन के चेयरमैन व उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक की संस्तुति पर उत्तर प्रदेश ओलंपिक एसोसिएशन के महासचिव डॉ आनन्देश्वर पांडेय द्वारा माँ दुर्गा जी विद्यालय के निदेशक सूर्यांश प्रकाश सिंह को जौनपुर ओलंपिक संघ का वरिष्ठ उपाध्यक्ष मनोनीत किया। जिसकी सूचना पत्र के माध्यम से जिम्मेदारो को दे दी गई। सूर्यांश प्रकाश सिंह वाराणसी मण्डल ओलंपिक संघ में कार्यकारी सदस्य के रूप में पहले से कार्य कर रहे है, जो की आगामी 16 से 18 नवंबर तक प्रदेश में पहली बार यूपी यूथ गर्ल्स मिनी ओलंपिक खेलों का आयोजन करने जा रहा। जिसमें प्रदेश के सभी 18 मंडलों से टीमें योगासन, ताईकांडों, नेटबॉल, थ्रोबॉल, खो-खो,

वॉलीबॉल व कबड्डी सहित कुल सात खेलों में प्रतिभाग करेंगी । सभी खेल वाराणसी मण्डल के वाराणसी, जौनपुर, गाजीपुर व चंदौली ज़िलों में आयोजित किया जाएगा। जौनपुर में 17 व 18 नवंबर को योगासन ओलंपिक खेल का आयोजन होगा। जिसमें सभी टीमें आर्टिस्टिक योगा, रिदीमिक योगा, ग्रुप योगा आदि का प्रदर्शन करेंगी तथा मिनी ओलंपिक खेलों का शुभारंभ कार्यक्रम 16 नवंबर को वाराणसी के बरेका (बी.एल.डब्लू.) स्टेडियम होगा। यूपी स्टेट राइफल संघ के अध्यक्ष व सांसद श्याम सिंह यादव जौनपुर ओलंपिक संघ के वर्तमान ज़िलाध्यक्ष है। सूर्यांश प्रकाश सिंह के मनोनयन पर वाराणसी मण्डल ओलंपिक संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष जगदीप मधोक, महासचिव अमित पांडेय, प्रबंधक सूर्य प्रकाश सिंह मुन्ना, आशीष सिंह, डा जयेश सिंह, अरविंद पांडेय खेल शिक्षकों ने प्रसन्नता व्यक्त कर बधाई दी।

रोटरी विश्वशांति चौराहे का अवलोकन

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के पूर्व अध्यक्ष कोलकाता निवासी शेखर मेहता ने अपने दो दिवसीय वाराणसी और मिजार्पुर के दौरे के दौरान वाराणसी हवाईअड्डे के पास स्थित रोटरी विश्व शांति चौराहा का अवलोकन किया और कहा कि आज पूरे विश्व को शांति व सद्भाव की बड़ी जरुरत है` रूस व यूक्रेन युद्ध के 20 महीने से जारी रहने और कुछ वैश्विक शक्तियों के बीच वैचारिक संघर्ष को मानव जाति के लिए खतरनाक बताते हुए उन्होंने कहा कि पूरी दुनिया को एकजुट होकर रहना होगा। रोटरी क्लब वाराणसी सेंट्रल द्वारा गतवर्ष स्थापित यह सुंदर चौराहा हम सबको विश्व शांति और सद्भाव का बड़ा सन्देश देता है उन्होंने आगे कहा कि पूरी दुनिया के रोटरी सदस्य देशों की सीमा से ऊपर उठकर अब वैश्विक साक्षरता के लिए कार्यरत हैं` भारत और दुनिया से पोलियो की समाप्ति के बाद अब शिक्षा, पर्यावरण, कुपोषण और

लैंगिक समानता जैसे विषयों पर हमारा विशेष ध्यान है भारत को एक शिक्षित राष्ट्र बनाने की दिशा में उल्लेखनीय कोशिशें जारी है जिसमें रोटरी भारत सरकार के साथ मिलकर काम कर रहा है। प्रारम्भ में रोटरी चौराहे पर पहुँचने पर मंडल सचिव रो. देव प्रमोद अग्रवाल, रो. दिनेश गर्ग और रो. अजीत मेहरोत्रा ने शेखर मेहता और उनकी धर्मपत्नी राशी मेहता का स्वागत व अभिनन्दन किया ज्ञात हो कि इस चौराहे का उद्घाटन गत वर्ष जून माह में प्रदेश के उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक द्वारा किया गया था। अपने दौरे में शेखर मेहता ने काशी विश्वनाथ मंदिर व मां विंध्यवासिनी का दर्शन पूजन किया और मिजार्पुर में मंडलाध्यक्ष सुनील बंसल के नेतृत्व में पब्लिक इमेज व साक्षरता विषय पर आयोजित रोटरी अंतरनगरी संगोष्ठी को संबोधित किया जिसमें 43 शहरों के 500 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

श्री गणेश पुजानोत्सव सेवा समिति द्वारा धूमधाम से गणपति बाबा का किया गया विसर्जन

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। पाण्डेयपुर - भोजूबीर रोड पर महावीर मंदिर चौराहा स्थित महावीर नगर कॉलोनी गली नंबर 2 में श्री गणेश पुजानोत्सव सेवा समिति द्वारा बुधवार की रात धूमधाम से किया गया गणपति बाबा का विसर्जन जिसमें 100 से अधिक भक्तगण सम्मिलित हुए। क्षेत्रीय भाजपा नेता संजय पांडे द्वारा बताया गया कि गणपति बाबा का विसर्जन को बहुत ही भव्य तरीके से किया गया जिसमें महिलाएं और पुरुषो ने चढ़ बढ़कर भाग लिए , श्री गणेश पुजानोत्सव सेवा समिति अध्यक्ष संपूणार्नंद छात्र नेता शास्त्री राज बाबा के द्वारा संपन्न कराया गया। अश्वनी पांडे, यश पांडे, अनमोल पांडे, राहुल पांडे, अंशु पांडे, मोहित पांडे, रोहित पांडे, उदय विकास, अविनाश, मोनू यादव, ऋषि देव उपाध्याय, प्रियांशु रावत, अंकित, अरविन्द सिंह चंदेल, बृजेश मिश्रा, पंकज पांडे, त्रयंबकेश्वर पांडे ,धर्मेंद्र सिंह गुड्डू , राजेश सिंह सहित इत्यादि लोग काफी संख्या में सम्मिलित हुए।

आचार्य सीताराम चतुवेर्दी महिला महाविद्यालय में विश्व पर्यटन दिवस मनाया गया

प्रखर रामनगर वाराणसी। डोमरी आचार्य सीताराम चतुवेर्दी महिला महाविद्यालय में विश्व पर्यटन दिवस मनाया गया। महाविद्यालय की निदेशिका प्रो. कल्पलता पांडेय, पूर्व कुलपति, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया, उ0प्र0 ने कहा कि विश्व पर्यटन दिवस की शुरूआत वर्ष 1980 में संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन के द्वारा हुई इस तिथि के चुनाव का मुख्य कारण यह था कि वर्ष 1970 में UNWTO की कानून को स्वीकारा गया था। इस मूर्ति को स्वीकारना वैश्विक पर्यटन को बढ़ावा देने के प्रयास हेतु मिल के पत्थर के रूप में देखा जाता है एवं इस दिवस को मनाने का उद्देश्य विश्व में इस बात को प्रसारित तथा जागरूकता फैलाने के लिए है कि किस प्रकार पर्यटन वैश्विक रूप से, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा आर्थिक मूल्यों को बढ़ाने में तथा आपसी समझ बढ़ाने में सहायता कर सकता है। महाविद्यालय के शिक्षक डॉ. अमित रंजन तथा छात्राओं ने भी विश्व पर्यटन दिवस के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. विजय शंकर मिश्र तथा संचालन महाविद्यालय की शिक्षिका डॉ. रजनी श्रीवास्तव ने किया। कार्यक्रम में डॉ. रचिता सिंह, श्रीमती प्रतिभा गुप्ता, डॉ.' अभिजीत, सुश्री सुरभि पांडेय आदि शिक्षक-शिक्षिकाएं एवं छात्राएं मौजूद रहे।

मॉर्निंग वॉक के समय पैसेंजर ट्रेन से कट कर अधेड़ की मौत

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। शहर कोतवाली क्षेत्र के रजदेपुर रेलवे क्रासिंग पर बुधवार की सुबह ट्रेन से कटकर अधेड़ की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि दूगज सिंह 77 वर्ष पुत्र स्व० श्याम सुंदर सिंह निवासी कपूरपुर खोआ मंडी रौजा की ट्रेन के चपेट में आने से मृत्यु हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार दुगज सिंह रोज की तरह बुधवार की सुबह मार्निंग में टहलने गयें थे। सुबह करीब सवा सात बजे वापसी के समय क्रासिंग पार करते समय बलिया की तरफ से आ रही पैसेंजर ट्रेन की चपेट में आ गए। घटना की जानकारी लोगों द्वारा जहाँ पुलिस को दी गई वही परिजनों को सूचना मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया। घटना स्थल पर पहुंचीं पुलिस ने शव को कब्जा में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतक के पुत्र प्रवीण सिंह ने बताया कि मेरे पिता प्रतिदिन सुबह टहलने जातें थे।

सवा किलो अवैध गांजा संग अभियुक्त चढ़ा मुहम्मदाबाद पुलिस के हत्थे

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। पुलिस अधीक्षक गाजीपुर के आदेशानुसार जनपद गाजीपुर में अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण व क्षेत्राधिकारी मुहम्मदाबाद के निकट पर्यवेक्षण में बुधवार को उप निरीक्षक कृष्ण प्रताप सिंह मय हमराहीगण द्वारा परसा तिराहे पर समय सुबह करीब 4.20 बजे 01 शातिर अपराधी को 01 किलो 250 ग्राम नाजायज गाँजा के साथ गिरफ्तार किया गया पूछताछ पर अपना नाम जावेद उर्फ पप्पू पुत्र शमशुल कुरैशी नि0 वार्ड नं0 4 जफरपुरा कस्बा व थाना मोहम्मदाबाद जनपद गाजीपुर बताया। अभियुक्त द्वारा किये गये उक्त अपराध के सम्बन्ध में थाना स्थानीय मु0अ0सं0 204/2023 धारा 8/20 एनडीपीसी ऐक्ट पंजीकृत कर अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में उप निरीक्षक कृष्ण प्रताप सिंह थाना मुहम्मदाबाद, हेड कांस्टेबल दीपक कुमार मिश्र थाना मुहम्मदाबाद, कांस्टेबल अजीत यादव थाना मुहम्मदाबाद, कांस्टेबल नवीन कुमार थाना मुहम्मदाबाद, कांस्टेबल विमल कुमार यादव थाना मुहम्मदाबाद, कांस्टेबल प्रभाकर कुमार मिश्र थाना मुहम्मदाबाद जनपद गाजीपुर शामिल रहे।

रौजा पुलिस पिकेट के पास ट्रैक कुचलकर बाइक सवार अधेड़ की मौत

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। सदर कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत बीती रात लगभग सवा नौ बजे ट्रक से कुचलकर बाइक सवार की दर्दनाक मौत हो गई। मृतक जंगीपुर थाना क्षेत्र के मैहरलीपुर निवासी चंद्रशेखर सिंह यादव उम्र 40 वर्ष पुत्र धरमू यादव बताया जा रहा है।

जानकारी के अनुसार रौजा त्रिमुहानी पुलिस पिकेट के पास हुए भीषण दुर्घटना के बाद त्रिमुहानी के तीनो सड़को पर वाहनों की लंबी कतार लग जाने से जाम लग गया। कुछ देर बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने 100 को अपने कब्जे में लेते हुए आवागमन सुचारू रूप से बहाल कराया। वही महज कुछ कदमों की दूरी पर स्थित पिकेट पर दुर्घटना के समय पुलिस की मौजूदगी ना होने से लोगों में काफी आक्रोश देखने को मिला। मौके पर उपस्थित प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया की सड़क के गड्ढे के चलते बाइक अनियंत्रित होकर पलट गई और वाहन चला रहे चंद्रशेखर को सामने से आ रही ट्रक ने कुचल दिया जिससे घटना स्थल पर ही उसकी दर्दनाक मौत हो गई। रौजा त्रिमुहानी पर पुलिस पिकेट भी है इसके बावजूद घटना के वक्त पुलिस की ना मौजूदगी से लोगों में अत्यधिक आक्रोश देखने को मिला। जब तक पुलिस मौके पर पहुंचती तब तक तिराहे से जोड़ने वाले तीनों रास्तों पर वाहनों की लंबी कतार लग गई थी। मौके पर पहुंची पुलिस द्वारा मृतक की जामा तलाशी में मिले कागजातो के जरिए उसकी पहचान की गई और परिजनों को सूचना दी गई साथ ही शव को कब्जे में लेकर यातायात बहाल कराया गया।

परंपरा

डा. पुष्पलता मिश्रा

दिशा का संकेत करता है शब्द रक्सहूं

छत्तीसगढ़ में दक्षिण दिशा के लिए रक्सहूं शब्द का प्रचलन है। छत्तीसगढ़ी में राक्षस को रक्सा कहा जाता है। दक्षिण दिशा के लिए छत्तीसगढ़ी में अन्य कोई शब्द नहीं है। दक्षिण दिशा के लिए रक्सहूं शब्द भगवान श्रीराम के समय से ही प्रचलित है। इस दिशा में राक्षसों के मारे जाने के बाद इनकी हड्डियां बिखरी पड़ी थी, इसलिए इस स्थान (बस्तर अंचल के एक भू-भाग) को 'रक्सा हाड़ा' कहा जाता है। छत्तीसगढ़ी में आम बोलचाल की भाषा में आज भी दक्षिण दिशा के लिए रक्सहूं शब्द उपयोग में लाया जाता है। माना जाता है कि इस काल में छत्तीसगढ़ के दक्षिण के भू भाग पर राक्षसों ने कब्जा कर रखा था, इनके आतंक की छाप लोक स्मृति में इतनी गहरी थी, कि दक्षिण दिशा के लिए रक्सहूं शब्द रूढ़ हो गया। इसके साथ ही यह भी पूर्वजों से सुना जाता है, कि दक्षिणा दिशा के तरफ मुख कर भोजन ग्रहण नहीं करना चाहिए। छत्तीसगढ़ अंचल में इस दिशा में मुख कर भोजन ग्रहण करना अशुभ माना जाता है।

पुस्तक समीक्षा

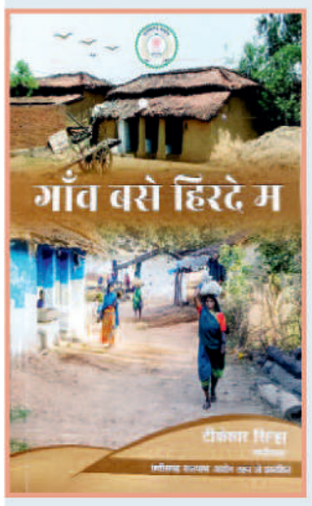

गांव बसे हिरदे म

कृति के नाव: गांव बसे हिरदे म

कृतिकार: टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

समीक्षक: कमल नारायण

प्रकाशक: छत्तीसगढ़ संवाद

छत्तीसगढ़ के लोक जीवन में तीज-तिहार, रहन-सहन, खानपान के अलग परंपरा हे। ऐ परंपरा ल हमन बरोबर मानत आवत हन। येकरे संग अपन संस्कृति ल बचाय अउ आगू बढ़ाय म कोनो कमती नी करत हन। इही कड़ी म ऐकर कृतिकार अपन कृति गांव बसे हिरदे म के माध्यम ले छत्तीसगढ़ी संस्कृति ल आगू बढ़ाय म कोनो कमी नी करत हे। आपके लगातार लेखनी छत्तीसगढ़ के माटी के खुशबू ल बगराय असन दिखथे। अपन कृति म इही उद्देश्य ल लेके 51 कविता ल सामिल करे हे जेमा हमर गंवई गांव के समृद्ध परंपरा के झलक देखे ल मिल जथे। बारामासी तीज-तिहार संग संस्कार अउ परंपरा ऊपर घलो कविता ह कुछु न कुछु संदेश देवत हे।

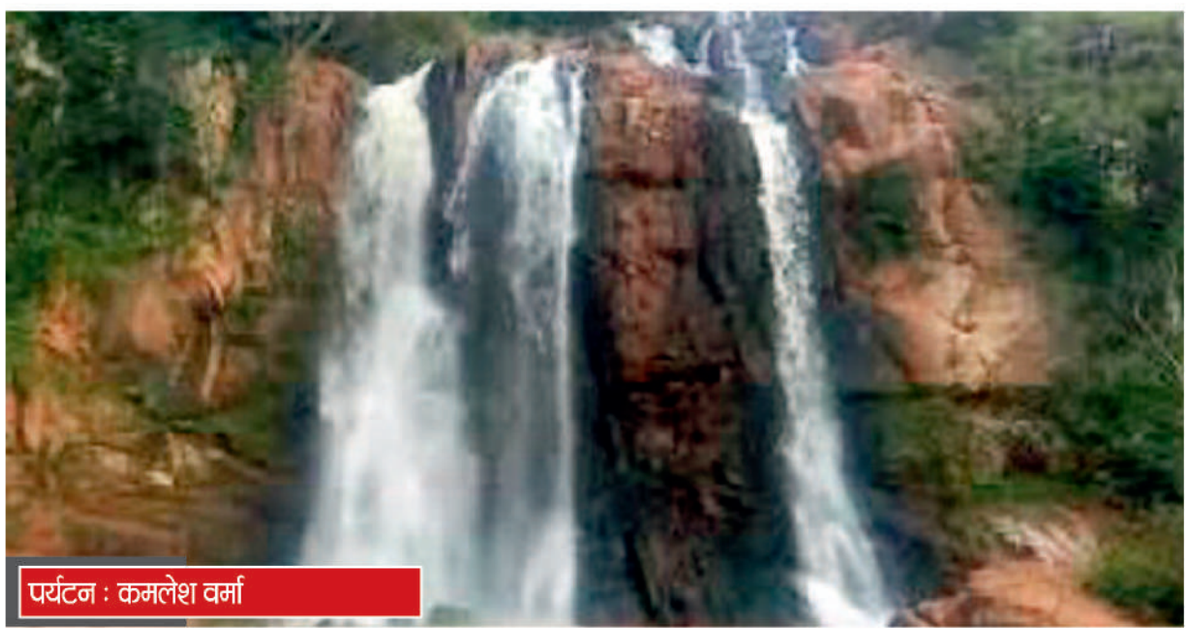

छत्तीसगढ़ के बस्तर अंचल के कुछ स्थानों में घुमंतू जाति मोगिया निवासरत हैं। इस समाज की उत्पत्ति के बारे में अनेक लोककथाएं प्रचलित हैं। मोगिया जाति के लोग अपना संबंध राजस्थान के विभिन्न राजवंशों से बताते हैं।

एक अलग विशेषता है मोगिया जाति का

यह जाति मुख्य रूप से कच्चे मकानों, झोपड़ी, तंबू या अस्थाई आवासों में निवास करते हैं। यह मुख्य रूप से एक शिकारी और खाद्य संकलक नृजातीय समूह है। इस जाति के लोगों में बहुत कम गोदना के प्रति झुकाव देखा जाता है, तथा सीमित अंगों में गोदना अंकन कराते हैं। इस समाज के लोग मुख्य रूप से वन देवी, काली देवी, चंडी देवी और काली देवी की पूजा करते हैं। अन्य देवताओं में भैरवबाबा, भूमियाबाबा और हीराबाबा की पूजा करते हैं। इनकी अपनी सामाजिक नियमावली होती है, उसी के अनुसार अपने संस्कार और संस्कृति का निर्वहन करते हैं। कोर्ट-कचहरी के मुकदमों से दूर अपनी समाज के न्याय व्यवस्था को ज्यादा महत्व देते हैं। इन जातियों में कहावतें जो अत्यंत विशिष्ट हैं-

जैसे बाजे बजंतरी कुल ना छेड़ए।
तुजे क्या परी पराई अपनी निबेड़ए।
आल पताल जिव्हा में है प्रथम काल।
पावन बेड़ी पड़ जाए तो जीव काल।

जनजाति : डा. वासुदेव सिंह जादौन

मनोहर सौंदर्य का स्थल झोझा जल प्रपात

पर्यटन : कमलेश वर्मा

छत्तीसगढ़ के पेन्ड्रा रोड क्षेत्र के अंतर्गत विकास खण्ड गौरेला के अंतिम छोर पर मौजूद बस्तीबगरा ग्राम पंचायत के पास लगभग 45 किमी दूरी पर झोझा जल प्रपात आकर्षण का केन्द्र है। इस स्थल के चारों ओर ऊंची-ऊंची पहाड़ी है तथा बड़े-बड़े विभिन्न प्रजातियों के पेड़-पौधे की हरियाली मन को आत्मिक शांति प्रदान करते हैं। इस स्थल तक पहुंचने के लिए चौड़ा रस्ता होने के कारण किसी भी वाहन से आसानी से पहुंचा जा सकता है। बरसात के दिनों में यह स्थल और भी आकर्षक लगने लगता है। प्रायः देखा जाता है कि जुलाई से लेकर जनवरी माह तक लगभग 100 फिट की उंचाई से पानी झरने के रूप में गिरता है। इस अनछुए स्थल पर अब हजारों पर्यटक दूर-दूर से प्रकृति के मनोरम दृश्य का आनंद लेने पहुंचने लगे हैं।

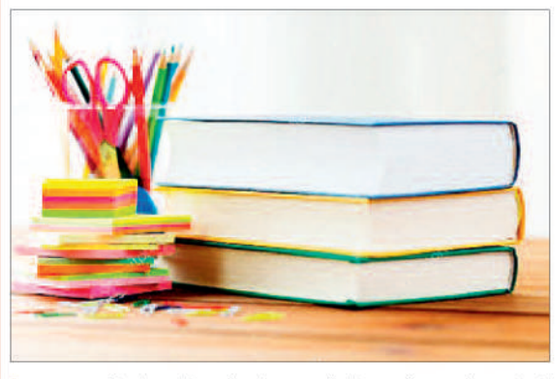

नाचा की पहली महिला कलाकार फिदाबाई

लोक नाट्य : अनिल जांगड़े गौतरिहा

नाचा में पारंपरिक तौर पर पुरूष ही स्त्री रूप धरकर नाचथे थे, लेकिन रवेली साज में पहली बार एक महिला कलाकार मंच पर नृतक के रूप में उपस्थित हुई। दुलार सिंह साव मंदराजी द्वारा गठित रवेली साज नाचा दल को अब तक का सबसे चमत्कारी दल कहा जाता है। इसी साज में गायन व नृत्य के साथ अभिनय की त्रिवेणी बहाकर इतिहास रचने वाली महिला फिदाबाई मरकाम उस दौर की सर्वाधिक चर्चित गायिका व नर्तकी थी। हबीब तनवीर के विश्व प्रसिदध नाटक चरणदास चोर में भी फिदाबाई ने गायन और अभिनय किया। आगरा बाजार, बहादुर कलारिन, मिट्टी की गाड़ी, लाल सोहरत राम के साथ ही हिन्दी-छत्तीसगढ़ी के यादगार नाटकों में फिदाबाई की भूमिका सराहनीय रही। म.प्र. से तुलसी सम्मान के साथ ही आपको 1995 में संगीत नाटक अकादमी दिल्ली द्वारा पुरस्कृत भी किया गया था। इसके बाद माला बाई, किस्मत बाई, पद्मा जैसे अनेक महिला कलाकारों ने मंच के माध्यम से लोक कला की खूशबू बिखरने निःसंकोच आगे आने लगे।

लोक साहित्य : श्यामा सिंह

मिश्रित प्रभाव व्यक्त होती हैं दक्षिणी छत्तीसगढ़ी बोली में

दक्षिणी छत्तीसगढ़ी की मुख्य बोली बस्तरिहा छत्तीसगढ़ी की मिश्रित बोली है। इस वर्ग में अदकुरी, चंडारी, जोगी, धाकड़, नाहरी, बस्तरी, महारी और हल्बीकृत नौ बोलियां आती हैं। यह बोलियां पश्चिम में मराठी से, पूर्व में उड़िया से और दक्षिण में गोंडी से प्रभावित हैं। बस्तर के दक्षिण का भाग आंध्रप्रदेश के राजमहेन्द्री जिला से संबंधित होने के कारण दोरला बोली का समाहार करती हैं। दक्षिण-पश्चिम भाग में आंध्रप्रदेश के वारंगल तथा राजमहेन्द्री जिला तेलगू भाषा से प्रभावित होने के कारण यहां की छत्तीसगढ़ी तैलंगी कही जाती है। इन बोलियां का प्रभाव आज भी क्षेत्र विशेष तक सीमित है। उपरोक्त सभी बोलियों का प्रभाव अन्य स्थानों की बोलियों से काफी भिन्नता रखती हैं, जो कि यह उनकी अलग विशेषता को दर्शाती हैं। अन्य राज्यों की सीमावर्ती होने के कारण संबंधित राज्यों की बोलियों से भी प्रभावित होती दिखाई देते हैं।

सुरता

चम्पेश्वर गोस्वामी

बरसाती भइया के नाव रेडियो जगत म अमर होगे

आकाशवाणी रायपुर के माध्यम ले बरसाती भइया नाव ले गांव गांव के किसान अऊ छत्तीसगढ़िया मन के बीच लोकप्रिय हो गेव। आप मन मुंशी प्रेमचंद के कहानी सदगति ऊपर सत्यजीत रे के निर्देशन में टेली फिल्म में काम करेव। येकरे संग वीडियो फिल्म पुन्नी के चंदा, मां बम्लेश्वरी अऊ पिंजरा के मैना में अभिनय करेव। आप आकाशवाणी रायपुर अऊ भोपाल ले लोककथा अऊ लोकगीत के प्रचार- प्रसार खातिर सम्मानित घलव होय रेहेव।

केसरी प्रसाद बाजपेई उर्फ बरसती भैया के जन्म राजनांदगांव शहर में 1926 में होए रीहिस। आप अपन मूल नाव ले कमती अउ बरसाती भइया के नाव ले रेडियो जगत में चर्चित होएव। बाजपेई जी उदघोषक अऊ आलेख लिखैया के रूप में सन 1950 में आकाशवाणी नागपुर ले सेवा शुरू करीन। आकाशवाणी नागपुर में छत्तीसगढ़ी के कार्यक्रम ल लोकप्रिय बनाए अउ छत्तीसगढ़ी कलाकार मन ला आगू लाय में बरसाती भइया के बड़ योगदान रिहिस। आप मन गुड़ी के गोठ, फूलहेरा अऊ लहरिया कार्यक्रम के माध्यम ले छत्तीसगढ़ी सांस्कृतिक चेतना ला जगाए के बुता करेव। 1964 में छत्तीसगढ़ी प्रसारण के दायित्व आप ला मिलीस। आकाशवाणी रायपुर के माध्यम ले बरसाती भइया नाव ले गांव गांव के किसान अऊ छत्तीसगढ़िया मन के बीच लोकप्रिय हो गेव। आप मन मुंशी प्रेमचंद के कहानी सदगति ऊपर सत्यजीत रे के निर्देशन में टेली फिल्म में काम करेव। येकरे संग वीडियो फिल्म पुन्नी के चंदा, मां बम्लेश्वरी अऊ पिंजरा के मैना में अभिनय करेव। आप आकाशवाणी रायपुर अऊ भोपाल ले लोककथा अऊ लोकगीत के प्रचार-प्रसार खातिर सम्मानित घलव होय रेहेव। छत्तीसगढ़ी उद्घोषक के रूप म जतका सराहना बरसाती भइया ल मिलिस वोतका अभी तक कोनो दूसर उद्घोषक ल नइ मिले हे। आपके नाव ला आजो लोगन मन श्रदधा ले लेवत रहिथे।

संक्षिप्त खबरें

वर्ल्ड इकोनामी में गिरावट

नई दिल्ली। उद्योगपति निखिल साहनी ने कहा है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में गिरावट के बीच भारत वृद्धि दर्ज कर रहा है और देश 'मनोवैज्ञानिक रूप से महत्वपूर्ण' 5,000 अरब डालर की अर्थव्यवस्था का दर्जा हासिल करने के करीब है। सरकार ने आगामी वर्षों में भारत को 5,000 अरब डालर की अर्थव्यवस्था बनाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। त्रिवेणी टर्बाइन के वाइस चेयरमैन और प्रबंध निदेशक साहनी ने यहां अखिल भारतीय प्रबंधन संघ (एआईएमए) के एक सत्र को संबोधित करते हुए यह बात कही।

बीएसई अफसरों के इस्तीफे

नई दिल्ली। प्रमुख शेयर बाजार बीएसई ने मंगलवार को कहा कि उसके मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारी शिवकुमार पांडेय और विशेष परियोजनाओं के प्रमुख नयन मेहता ने इस्तीफा दे दिया है। बीएसई ने नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) को बताया कि पांडेय ने एक अन्य अवसर के लिए अपना इस्तीफा दिया है। दूसरी ओर मेहता ने व्यक्तिगत और स्वास्थ्य कारणों से पद छोड़ने का फैसला किया। पांडेय और मेहता के इस्तीफे क्रमशः चार दिसम्बर और 12 अक्टूबर से प्रभावी होंगे।

ओयो को मुनाफे की आस

नई दिल्ली। यात्रा प्रौद्योगिकी ब्रांड ओयो का परिचालन करने वाली ऑरेवल स्टेज को पहली बार सितम्बर में समाप्त होने वाली तिमाही में 16 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ कमाने की उम्मीद है। सूत्रों ने बताया कि ओयो के संस्थापक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) रितेश अग्रवाल द्वारा कंपनी के शीर्ष प्रबंधन को मंगलवार को भेजे गए ई-मेल में यह बात कही गई है। अग्रवाल ने कहा है कि यह साल ओयो का दसवां वर्ष है, जो इसे महत्वपूर्ण और विशेष बनाता है। "मेरे पास इस अवसर पर साझा करने के लिए समाचार है।

Rugs Festival आज से

नई दिल्ली। जयपुर रग्स 27 सितम्बर से जयपुर में रग उत्सव का आयोजन करने जा रहा है। कंपनी के डायरेक्टर योगेश चौधरी ने यहां जारी एक बयान में कहा कि इस उत्सव के 2023 के संस्करण का ऐलान करते हुए हमें खुशी है। उन्होंने कहा कि हमने हमेशा अपने बुनकरों के जीवन में रोशनी और खुशी लाने को प्राथमिकता दी है। इस साल हम रग उत्सव से प्राप्त आय का एक हिस्सा जेआर मेरिटोरियस स्कॉलरशिप प्रोग्राम में योगदान देकर अपनी प्रतिबद्धता को आगे बढ़ा रहे हैं।

सेंसेक्स 78 अंक टूटा

मुंबई। घरेलू शेयर बाजारों में मंगलवार को गिरावट आई और बीएसई सेंसेक्स 78 अंक के नुकसान में रहा। विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) की निकासी जारी रहने के बीच आईटी और बैंक शेयरों में मुनाफावसूली से बाजार में गिरावट रही। तीस शेयरों पर आधारित सेंसेक्स 78.22 अंक यानी 0.12 प्रतिशत की गिरावट के साथ 65,945.47 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय यह 158.06 अंक लुढक गया था। निफ्टी भी 9.85 अंक टूटकर 19,664.70 अंक पर बंद हुआ।

ओमेक्स का भूमि अधिग्रहण

नई दिल्ली। ओमेक्स समूह ने कहा कि उसने पंजाब के लुधियाना में 220 करोड़ रुपये में पांच एकड़ से अधिक जमीन का अधिग्रहण किया है। ओमेक्स ने बयान में कहा कि उसने 'रेल भूमि विकास प्राधिकरण (आरएलडीए) की प्रतिस्पर्धी बोली प्रक्रिया जरिये पांच एकड़ से अधिक जमीन हासिल की है।" बयान के मुताबिक, यह अधिग्रहण 220 करोड़ रुपये में हुआ है। ओमेक्स इस जमीन पर आवासीय और वाणिज्यिक दोनों परियोजनाएं विकसित करेगी। यह जानकारी ओमेक्स समूह के कार्यकारी निदेशक जतिन गोयल ने दी।

सोना डेढ़ सौ रुपए टूटा

नई दिल्ली। कमजोर वैश्विक संकेतों के बीच राष्ट्रीय राजधानी के सर्राफा बाजार में मंगलवार को सोना 150 रुपए की गिरावट के साथ 59,900 रुपए प्रति 10 ग्राम रह गया। एचडीएफसी सिक्योरिटीज ने यह जानकारी दी। इससे पिछले कारोबारी सत्र में सोना 60,050 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था। चांदी की कीमत भी 850 रुपये की गिरावट के साथ 74,500 रुपये प्रति किलोग्राम रह गई। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोना गिरावट के साथ 1,912 डालर प्रति औंस रहा।

मोटो जीपी रेस के आयोजन से प्रदेश में निवेश को मिलेगी रफ्तार

■ इस आयोजन के दौरान व्यापक पैमाने पर हुईं आर्थिक गतिविधियां ■ तीन दिनों के दौरान लगभग 106 मिलियन यूरो का हुआ कारोबार

नई दिल्ली।

ग्रेटर नोएडा के बुद्ध सर्किट पर आयोजित मोटो जीपी रेस ने प्रदेश में कारोबारी गतिविधियों को रफ्तार दी है जिससे उत्तर प्रदेश की ख्याति आज सारी दुनिया में फैल रही है। सीएम योगी के निर्देश पर इस इवेंट को लेकर की गई तैयारियों, मेहमानों की आवभगत, सुरक्षा व्यवस्था और बेहतरीन कनेक्टिविटी के चलते इस इवेंट के लिए देश और दुनिया के एक लाख से अधिक लोग ग्रेटर नोएडा स्थित बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट पहुंचे।

अरबों रुपए की आर्थिक गतिविधियां

मोटो जीपी का व्यापक आर्थिक प्रभाव भी पड़ा है। इस ग्लोबल इवेंट के दौरान विभिन्न माध्यमों के जरिए 106 मिलियन यूरो (9.33 अरब रुपए से ज्यादा) की आर्थिक गतिविधियां संचालित हुईं। इसमें ट्रैक के विकास और बुनियादी ढांचे में 50 करोड़ रुपए का पर्याप्त निवेश शामिल है। इन आर्थिक गतिविधियों का लाभ ग्रेटर नोएडा में होटल इंडस्ट्री, रेस्टोरेंट, परिवहन, हॉस्पिटैलिटी समेत कई सेक्टर्स को मिला है।

सोशल मीडिया पर रही धूम

लखनऊ (एसएनबी)। उत्तर प्रदेश ने जिस शानदार अंदाज में मोटो जीपी जैसे इंटरनेशनल इवेंट को आयोजित किया, उसके लिए सोशल मीडिया ने भी सीएम योगी के प्रयासों की जमकर तारीफ की। तारीफ करने वालों में यूपी के अलावा देश के अलग-अलग हिस्सों के यूजर्स शामिल रहे, जबकि विदेशियों ने भी ट्रैक और हॉस्पिटैलिटी को सराहा। डॉ. प्रीति प्रकाश नाम की एक यूजर ने एक्स पर लिखा, मोटो जीपी भारत 2023 में बाइक्स की रफ्तार, उत्तर प्रदेश के विकास की तीव्र रफ्तार को प्रदर्शित करती है।

- मोटो जीपी में आए एक लाख से ज्यादा विजिटर्स
- सीएम योगी के मार्गदर्शन में सुपरहिट रहा आयोजन
- तीन दिन में बुद्ध सर्किट पहुंचे रिकार्ड दर्शक
- 10 से 15 हजार विदेशी विजिटर्स ने भी लिया लुत्फ
- फाइनल रेस देखने को उमड़े 50 हजार विजिटर्स

यूपी में निवेश बढ़ने की उम्मीद

इवेंट के दूरगामी परिणाम देखने को मिलने वाले है। सीएम योगी की अपील पर कई बड़े ब्रांड्स यूपी में अपना निवेश बढ़ाने का मन बना रहे है और मोटो जीपी की सफलता इसमें अहम भूमिका निभा सकती है।

रिकार्ड संख्या में पहुंचे दर्शक

मोटो जीपी भारत में उमड़ी भीड़ ने इस बात को साबित किया है। बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट पर इस रेस का लुत्फ उठाने के लिए तीन दिनों में एक लाख से अधिक विजिटर्स यहां पहुंचे और उन्होंने रफ्तार और रोमांच से भरी इस रेस का अवलोकन किया। इन एक लाख विजिटर्स में से 10 हजार से 15 हजार के बीच विदेशी विजिटर्स शामिल रहे। राज्य सरकार द्वारा बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट तक पहुंचने के लिए जो तैयारियां की गई थीं उसका नतीजा रहा कि रिकार्ड संख्या में लोगों ने पहली बार भारत में हुई इस रेस का लुत्फ उठाया।

फाइनल में 50 हजार विजिटर्स

वैसे तो 22 से 24 सितम्बर के बीच सभी दिन बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट पर विजिटर्स की भारी भीड़ रही। सर्वाधिक विजिटर्स मोटो जीपी की फाइनल रेस के दिन उपस्थित रहे। करीब 50 हजार विजिटर्स ने मार्को बेजेची को रोमांचक मुकाबले में विनर बनते और सीएम योगी को उन्हें ट्रॉफी प्रदान करते हुए देखा। वहीं, दूसरे दिन करीब 30 हजार विजिटर्स ने क्वालीफाईंग और रेस का नजारा देखा तो शुक्रवार को करीब 15 हजार विजिटर्स बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट पहुंचे।

इसके अलावा 21 सितंबर को भी प्रैक्टिस रेस देखने के लिए हजारों की संख्या में विजिटर्स यहां पहुंचे थे। टीमों के साथ भी 5000 से ज्यादा विदेशी स्टाफ बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट पर पहुंचा था, तो वहीं 150 के करीब इंटरनेशनल और नेशनल मीडिया के लोग भी इवेंट को कवर करने के लिए मौजूद थे।

वाराणसी में बनेगा वर्ल्ड क्लास क्रूज टर्मिनल

नई दिल्ली (भाषा)। केंद्रीय मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने मंगलवार को कहा कि सरकार वाराणसी में नदी क्रूज पर्यटन के विस्तार के लिए वहां विश्व स्तरीय क्रूज टर्मिनल तैयार करने की योजना बना रही है।

बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्री ने आगामी ग्लोबल मैरीटाइम इंडिया समिट, 2023 के लिए आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि पर्यावरण अनुकूल और आधुनिक समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए सरकार पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि भारत दुनिया की सबसे लंबी नदी क्रूज एमवी गंगा विलास के साथ नदी क्रूज पर्यटन क्षेत्र में अग्रणी है। इसने इस साल फरवरी में असम के डिब्रूगढ़ में अपनी पहली यात्रा पूरी की।

सोनोवाल ने कहा, 'हम एक लाभप्रद परिवेश बना रहे हैं और देश भर में सभी बंदरगाहों का आधुनिकीकरण कर रहे हैं, चाहे वह सामानों की आवाजाही, माल के परिवहन या फिर लागत में कमी के लिए हो।' सोनोवाल के अनुसार, पीएम गति शक्ति पहल के साथ, सरकार ने जलमार्ग-केंद्रित परिवहन में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। मल्टीमॉडल माल ढुलाई हिस्सेदारी को दोगुना कर 12 प्रतिशत कर दिया है और 'लॉजिस्टिक' लागत को कम कर दिया है। ग्लोबल मैरीटाइम इंडिया समिट, 2023 का आयोजन 17 से 19 अक्टूबर, 2023 को होगा।

एंजल कर के नए नियम लागू

■ शेयरों की बिक्री से मिली पूंजी पर लगेगा 30% कर ■ अतिरिक्त रकम को माना जाएगा स्रोतों से आय

नई दिल्ली (भाषा)।

आयकर विभाग ने गैर सूचीबद्ध स्टार्टअप कंपनियों की तरफ से निवासी एवं अनिवासी निवेशकों को जारी किए जाने वाले शेयरों के मूल्यांकन से संबंधित नए एंजल कर नियम अधिसूचित किए हैं। एक स्टार्टअप कंपनी के शेयरों की बिक्री से मिलने वाली पूंजी पर वसूला जाने वाले कर को एंजल कर कहा जाता है।

पहले एंजल कर सिर्फ स्थानीय निवेशकों पर ही लगता था लेकिन चालू वित्त वर्ष के बजट में इसका दायरा बढ़ाकर विदेशी निवेशकों पर भी एंजल कर लगाने का प्रावधान किया गया था। बजट प्रस्ताव के मुताबिक, अधिशेष प्रीमियम को 'स्रोतों से आय' माना जाएगा और उस पर 30 प्रतिशत तक कर लगेगा। हालांकि उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) के पास पंजीकृत स्टार्टअप को नए मानकों से राहत दी गई है। केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) ने एक अधिसूचना में निवेशकों को जारी होने वाले शेयरों के मूल्यांकन की पद्धति का ब्योरा दिया है।

आयकर अधिनियम के नियम 11यू में बदलाव से यह प्रावधान किया गया है कि गैर-सूचीबद्ध स्टार्टअप की तरफ से जारी किए गए अनिवार्य रूप से परिवर्तनीय तरजीही शेयरों एवं इक्विटी शेयरों का मूल्यांकन भी उचित बाजार मूल्य पर आधारित हो सकता है। संशोधित नियमों में प्रस्तावित पांच नए मूल्यांकन के तरीकों को भी कायम रखा गया है। ये हैं। तुलनात्मक कंपनी विविध उपाए, संभाव्य भारित अपेक्षित प्रतिफल विधि, विकल्प मूल्य निर्धारण विधि, विश्लेषण विधि, और प्रतिस्थापन लागत की विधि। डेलॉयट इंडिया के साझेदार सुमित सिंघानिया ने कहा कि एक निवेशक के नजरिये से संशोधित नियम शेयरों के मूल्यांकन के तरीके का व्यापक दायरा मुहैया कराते हैं और इससे अनुपालन कम जटिल होने की उम्मीद है।

क्या है एंजल कर

एक स्टार्टअप कंपनी के शेयरों की बिक्री से मिलने वाली पूंजी पर वसूले जाने वाले कर को एंजल कर कहा जाता है।

सिंघानिया ने कहा, 'इसके साथ ही जरूरत पड़ने पर शेयरों के मूल्यांकन में उचित मूल्य से 10 प्रतिशत विचलन की मंजूरी देकर एक सुरक्षित स्थिति भी दी गई है।' नांगिया एंड कंपनी एलएलपी के भागीदार अमित अग्रवाल ने कहा कि भारतीय आयकर अधिनियम के नियम 11यू में संशोधन करदाताओं को कई मूल्यांकन विधियों के माध्यम से लचीलेपन की पेशकश करके सकारात्मक बदलाव लाने वाला है। एकेएम ग्लोबल के कर भागीदार अमित माहेश्वरी ने कहा कि नए एंजल कर नियमों ने सीसीपीएस मूल्यांकन तंत्र के एक महत्वपूर्ण पहलू का बहुत अच्छी तरह से ध्यान रखा है।

रिपोर्ट

डिजिटल पेमेंट को खूब एन्जॉय कर रहे हैं देश के युवा

■ इसके चलते दुकानदारों को यूपीआई पेमेंट में हुआ इजाफा ■ कई गुना बढ़ोतरी से ₹10 अरब को पार कर गया भुगतान

नई दिल्ली (भाषा)।

देश के युवा छोटी से छोटी वस्तु की भी खरीदारी के लिए डिजिटल भुगतान को खूब एन्जॉय करते हुए इसे प्राथमिकता दे रहे हैं। यह संकेत डिजिटल भुगतान से जुड़ी हाल ही में जारी एक रिपोर्ट से मिलते हैं।

एकीकृत भुगतान प्रणाली यूपीआई के जरिये डिजिटल भुगतान की संख्या अगस्त में कई गुना बढ़कर 10 अरब होने के पीछे ग्राहकों से दुकानदारों (पी2एम) को किए जाने वाले लेनदेन में आई तेजी की अहम भूमिका रही है। दुकानदारों को डिजिटल पेमेंट में युवाओं का बड़ा योगदान है।

वर्ल्डलाइन की रिपोर्ट कहती है कि जनवरी, 2018 में यूपीआई से 15.1 करोड़ लेनदेन किए गए थे और यह संख्या जून, 2023 में बढ़कर 9.3 अरब हो गई थी। अगस्त में यह आंकड़ा 10 अरब के पार पहुंच गया। इसके पीछे पी2एम लेनदेन में हुई जबर्दस्त तेजी का अहम योगदान रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक, जनवरी 2022 में पी2एम का हिस्सा कुल यूपीआई लेनदेन में 40.3 प्रतिशत था। डेढ़ साल में यह अनुपात बढ़कर जून, 2023 में 57.5 प्रतिशत हो गया। इस अनुपात के आगे भी बढ़ने का अनुमान है।

यूपीआई से भेजी जाने वाली धनराशि में भी बढ़ोतरी के मिल रहे हैं संकेत

इसके अलावा यूपीआई लेनदेन से भेजी जाने वाली औसत राशि का आकार भी भविष्य में इसके विस्तार का संकेत देता है। जनवरी, 2022 में यूपीआई से पी2एम लेनदेन का औसत आकार 885 रुपये था जो जून, 2023 में घटकर 653 रुपये रह गया। इससे पता चलता है कि अब लोग कम राशि का लेनदेन भी यूपीआई के जरिये करना पसंद कर रहे हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक, राजमार्गों पर इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रह के इस्तेमाल ने टोल भुगतान के तरीके को काफी हद तक बदल दिया है। इस भुगतान में भी यूपीआई लेनदेन का प्रमुख रूप से इस्तेमाल हो रहा है।

डीमैट खाताधारकों के लिए नामिनी जोड़ने की समयसीमा दिसम्बर हुई

नई दिल्ली (भाषा)।

पूंजी बाजार नियामक सेबी ने मंगलवार को मौजूदा डीमैट खाताधारकों के लिए नामित व्यक्तियों को जोड़ने की समयसीमा दिसंबर के अंत तक बढ़ाने की घोषणा की।

निवेशक एक घोषणा पत्र के जरिए किसी को नामित नहीं करने का विकल्प भी चुन सकते हैं। कारोबारी सुगमता के लिहाज से डीमैट खातों के लिए नामांकन का विकल्प स्वैच्छिक बना दिया गया है। इससे पहले नामित व्यक्तियों को जोड़ने की समयसीमा 30 सितम्बर थी। इस

तरह इसे तीन महीने के लिए बढ़ाया गया है। सेबी के इस कदम का मकसद निवेशकों की संपत्ति सुरक्षित करने और उनके कानूनी उत्तराधिकारियों को यह संपत्ति सौंपने में उनकी मदद करना है।

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने एक परिपत्र में कहा, 'डीमैट खातों के संबंध में नामांकन की पसंद का ब्योरा जमा करने की अंतिम तारीख को 31 दिसंबर, 2023 तक बढाने का निर्णय लिया गया है।' इसके अलावा बाजार नियामक ने भौतिक प्रतिभूतिधारकों को पैन, नामांकन, संपर्क विवरण, बैंक खाता विवरण और उनके संबंधित फोलियो नंबरों के लिए नमूना हस्ताक्षर जमा करने को 31 दिसम्बर तक समय दिया है।

अंबानी के बच्चे नहीं लेंगे वेतन

■ सिर्फ बोर्ड बैठकों की लेंगे फीस

आकाश

ईशा

अनन्त

नई दिल्ली (भाषा)। रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड के निदेशक बनाए गए अंबानी परिवार के तीनों उत्तराधिकारी कोई वेतन नहीं लेंगे और उन्हें सिर्फ निदेशक मंडल एवं समितियों की बैठकों में शामिल होने की फीस दी जाएगी। कंपनी ने उनकी नियुक्ति पर शेयरधारकों की मंजूरी लेने के लिए रखे गए प्रस्ताव में यह जानकारी दी है।

रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी वित्त वर्ष 2020-21 से ही कोई वेतन नहीं ले रहे हैं। उनके दोनों पुत्रों आकाश एवं अनंत और पुत्री ईशा को कंपनी के निदेशक मंडल में शामिल किए जाने की घोषणा अगस्त में आयोजित वार्षिक आमसभा में की गई थी। रिलायंस ने अब अपने शेयरधारकों को डाक के जरिये पत्र भेजकर इन तीनों नियुक्तियों पर उनकी मंजूरी मांगी है। इस नोटिस में कहा गया है कि नए निदेशकों को निदेशक मंडल या समितियों की बैठक में शामिल होने के शुल्क के रूप में भुगतान किया जाएगा। वे निदेशक के तौर पर कंपनी से कोई वेतन नहीं लेंगे। ईशा अंबानी रिलायंस के खुदरा कारोबार रिलायंस रिटेल का जिम्मा संभाल रही हैं। वहीं आकाश अंबानी दूरसंचार कारोबार जियो की कमान संभाल रहे हैं। उनके भाई अनंत अंबानी के पास रिलायंस का ऊर्जा एवं नवीकरणीय ऊर्जा कारोबार है। मुकेश अंबानी ने अपनी उत्तराधिकार योजना के तहत अपनी सभी संतानों के बीच कारोबार के अलग-अलग खंडों का वितरण किया है। हालांकि, वह अभी 5 साल तक कंपनी के चेयरमैन बने रहेंगे।

जीएसटी परिषद की बैठक सात अक्टूबर को

नई दिल्ली (भाषा)।

माल एवं सेवा कर (जीएसटी) परिषद की अगली बैठक सात अक्टूबर को होगी। जीएसटी परिषद ने 'एक्स' पर लिखा है, 'जीएसटी परिषद की 52वीं बैठक सात अक्टूबर, 2023 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में होगी।'

केंद्रीय वित्त मंत्री की अगुवाई वाली जीएसटी परिषद की पिछली बैठक दो अक्टूबर को हुई थी। इस बैठक में कसीनो, घुड़दौड़ और ऑनलाइन गेमिंग पर कराधान में स्पष्टता के लिए जीएसटी कानून में संशोधन को मंजूरी दी गई थी। परिषद में राज्यों के मंत्री भी शामिल हैं।

पिछली बैठक में कसीनो, घुड़दौड़ और ऑनलाइन गेमिंग पर दांव के कुल अंकित मूल्य पर 28 प्रतिशत जीएसटी लगाने का फैसला किया गया था।

टी बोर्ड पुरानी नीलामी प्रणाली को वापस लाएगा

कोलकाता/गुवाहाटी (भाषा)।

टी बोर्ड इंडिया ने पुरानी नीलामी प्रणाली को वापस लाने का निर्णय लिया है। इसके लिए उसने आवश्यक समयसीमा जारी की है। इस बारे में टी बोर्ड ने देश भर में पंजीकृत नीलामी आयोजकों, उत्पादक संघों और खरीदार संगठनों को पत्र लिखा है।

एक पत्र में कहा गया है कि अब पूर्ववर्ती अंग्रेजी नीलामी प्रणाली की प्रथाओं को लागू करने का निर्णय लिया गया है। इससे पहले, यह प्रणाली अप्रैल 2023 में उत्तर भारत में शुरू की गई थी। टी बोर्ड ने नए सॉफ्टवेयर में अंग्रेजी नीलामी प्रणाली की सुविधाओं को फिर से शुरू करने के संबंध में एनएसईआईटी लिमिटेड के साथ पहले ही परामर्श कर लिया है।

रुपया न्यूनतम स्तर के नजदीक

■ डालर के मुकाबले 14 पैसे गिरकर 83.27 पर पहुंचा

नई दिल्ली (भाषा)।

रुपये में लगातार दूसरे दिन गिरावट जारी रही और मंगलवार को यह अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 14 पैसे टूटकर 83.27 (अस्थायी) के स्तर पर बंद हुआ। प्रमुख विदेशी मुद्राओं के मुकाबले डॉलर की मजबूती और विदेशी पूंजी की निकासी जारी रहने के चलते रुपये पर दबाव बना।

विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने कहा कि इसके अलावा शेयर बाजार में कमजोरी और कच्चे तेल की कीमतों में तेजी के चलते भी घरेलू मुद्रा पर असर पड़ा। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में डॉलर के मुकाबले रुपया 83.19 पर खुला और दिन के दौरान इसने 83.17 के ऊपरी और 83.27 के निचले स्तर के बीच कारोबार किया। अंत में रुपया 83.27 (अस्थायी) पर बंद हुआ, जो पिछले बंद भाव के मुकाबले 14 पैसे की गिरावट है।

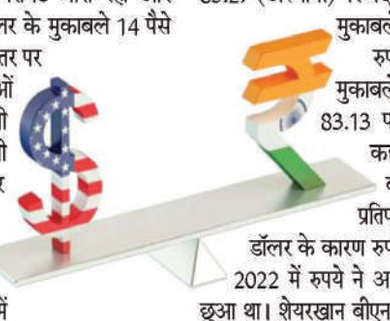

रुपया सोमवार को डॉलर के मुकाबले 19 पैसे की गिरावट के साथ 83.13 पर बंद हुआ। विश्लेषकों ने कहा कि कमजोर एशियाई बाजारों और अमेरिका बान्ड प्रतिफल बढ़ने के बीच मजबूत डॉलर के कारण रुपये में गिरावट आई। अक्टूबर 2022 में रुपये ने अपने न्यूनतम स्तर 83.29 को छुआ था। शेयरखान बीएनपी पारिबा के शोध विश्लेषक अनुज चौधरी ने कहा कि अमेरिकी डॉलर के सकारात्मक रुख और कमजोर घरेलू बाजारों में कमजोरी के कारण रुपये में गिरावट आई।

पहाड़ी वादियों में ड्रोन से पहुंचेंगी दवाएं

■ दवा कंपनी सिप्ला ने की है इसकी शुरुआत ■ हिमाचल प्रदेश से की जाएगी इसकी शुरुआत

नई दिल्ली (भाषा)।

औषधि बनाने वाली कंपनी सिप्ला ने हिमाचल प्रदेश के अस्पतालों और दवा दुकानों में महत्वपूर्ण दवाएं तुरंत पहुंचाने के लिये ड्रोन आधारित डिलीवरी सेवा शुरू की है। इसके लिये कंपनी ने स्काई एयर मोबिलिटी के साथ भागीदारी की है।

मुंबई की कंपनी का लक्ष्य इस पहल के तहत हृदय, श्वसन और अन्य गंभीर बीमारियों के उपचार के लिये दवाओं की डिलिवरी करना है। सिप्ला ने मंगलवार को बयान में कहा कि ड्रोन के इस्तेमाल से दूरदराज के इलाकों में दवा दुकादनदारों और क्लीनिक को दवाओं की समय पर डिलिवरी में मदद मिलेगी। इससे दवाओं की आपूर्ति में देरी और ठंडी जगह रखी जाने वाले औषधियों को लेकर समस्या दूर होगी।

- अस्पतालों और दवा की दुकानों पर दवाएं पहुंचने में होगी आसानी
- कम समय में गंतव्य तक पहुंचेंगी सभी जरूरी दवाएं
- उत्तराखंड और नार्थ ईस्ट के पहाड़ी क्षेत्रों में शुरू होगी योजना

कंपनी ने कहा कि उसका लक्ष्य भविष्य में सेवा का विस्तार करना है। इसके तहत उत्तराखंड और पूर्वोत्तर क्षेत्र के दुर्गम तथा पहाड़ी इलाकों तक दवाओं की आपूर्ति की जाएगी।

एशियाड महाकुंभ

घुड़सवारी में जीता स्वर्ण, पाल नौकायन में रजत और कांस्य

एजेंसी ▶▶ हांगझोऊ

भारत की घुड़सवारी टीम ने एशियाई खेलों में 41 साल बाद अपना पहला स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रचा जबकि पाल नौकायन (सेलिंग) में नेहा ठाकुर रजत और इबाद अली कांस्य पदक जीतने में सफल रहे। निशानेबाजी में भारत के दिव्यांश पंवार और रमिता जिंदल की जोड़ी हालांकि दस मीटर एयर राइफल मिश्रित स्पर्धा में मामूली अंतर से कांस्य पदक से चूक गई जबकि जूडो में तुलिका मान को भी कांस्य पदक के मुकाबले में हार का सामना करना पड़ा। तैराकी में भारत की चार गुणा 100 मीटर पुरुष मेडले रिले टीम ने दिन में दूसरी बार राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ा लेकिन इसके बावजूद पांचवें स्थान पर रही। टेनिस में सुमित नागल और अंकिता रैना ने एकल मुकाबलों कें क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई जबकि रामकुमार रामनाथन और रुतुजा भोसले को हार का सामना करना पड़ा। युकी भांबरी और अंकिता की मिश्रित युगल जोड़ी भी जीत दर्ज करने में सफल रही। भारत पदक तालिका में तीन स्वर्ण, तीन रजत और छह कांस्य पदक सहित कुल 12 पदक के साथ छठे स्थान पर चल रहा है।

जोशना, चिनप्पा, हरिंदर, सौरव ने दिखाया दम

भारतीय स्क्वाश टीमों ने मंगलवार को यहां एशियाई खेलों की पुरुष और महिला स्पर्धाओं में दमदार आगाज करते हुए में क्रमशः सिंगापुर और पाकिस्तान पर आसान जीत दर्ज की। अनुभवी जोशना चिनप्पा, 15 साल की अनाहत सिंह, और तन्वी खन्ना की तीसरी वरीयता प्राप्त भारतीय महिला टीम ने पूल बी के अपने शुरुआती मैच में पाकिस्तान को 3-0 से मात दी। पुरुष वर्ग में शीर्ष वरीयता प्राप्त भारतीय टीम के लिए हरिंदर पाल संधू, सौरव घोषाल, अभय सिंह ने सिंगापुर पर जीत दर्ज की।

ऐसा रहा पुरुष वर्ग का मुकाबला

पुरुष वर्ग में चोट से वापसी कर रहे हरिंदर को शुरुआती मैच में सिंगापुर के जेरोम क्लेमेंट ने कड़ी टक्कर दी लेकिन भारतीय खिलाड़ी ने 39 मिनट तक चले मैच को 11-4, 13-11, 8-11, 11-7 से जीता। जोशना की तरह ही अपने छठे एशियाई खेलों में भाग ले रहे शीर्ष भारतीय खिलाड़ी घोषाल ने सैमुअल कंग को 11-9, 11-1, 11-4 जबकि अभय सिंह ने मार्कस फुआ को सीधे गेमों में 1-7, 11-7, 11-7 से हराया।

15 साल की अनाहत का शानदार प्रदर्शन

भारतीय टीम ने स्क्वैश के मुकाबले में पाकिस्तान को 3-0 से हरा दिया. अनहत सिंह, जोशना चिनापा और तनवी खन्ना ने सीधे सेटों में 3-0 से जीत दर्ज की। पंद्रह वर्षीय अनाहत सिंह, जो अंडर-15 और अंडर-17 एशियाई चैंपियन हैं, ने सादिया गुल को 11-6, 11-6, 11-3 से हराया। इस बीच, जोशना चिनप्पा ने दूसरे मैच में पाकिस्तान की नूर उल हुदा सादिक को 11-2, 11-5, 11-7 से हराया। भारत का अगला मुकाबला अब बुधवार को नेपाल के साथ होगा। भारतीय टीम दो ग्रुप मैच खेलेगी।

तलवारबाज भवानी क्वार्टर फाइनल में हारीं

वहीं, एशियाई खेलों 2023 में क्वार्टर फाइनल में भवानी देवी का महिला व्यक्तिगत तलवारबाजी अभियान समाप्त हो गया। भारतीय फेंसर को विश्व की 11वें नंबर की एशियाई रजत पदक विजेता चाइन की शाओ याकी से 15-7 से हार का सामना करना पड़ा। टोक्यो ओलंपियन भवानी देवी ने आज छह मैचों की जीत के दम पर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया था।

भारत की चार गुणा 100 मीटर मेडले टीम फाइनल में पांचवें स्थान पर

भारत की चार गुणा 100 मीटर रिले टीम ने दिन में दूसरी बार राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ा लेकिन इसके बावजूद मंगलवार को यहां एशियाई खेलों में पांचवें स्थान पर रही। श्रीहरि नटराज, लिखित सेल्वराज, साजन प्रकाश और तनीश जॉर्ज मैथ्यू की चौकड़ी ने फाइनल में तीन मिनट 40.20 सेकेंड के समय के साथ सुबह के सत्र में शुरुआती दौर की हीट एक में बनाए तीन मिनट 40.84 सेकेंड के राष्ट्रीय रिकॉर्ड में सुधार किया। चीन ने तीन मिनट 27.01 सेकेंड के एशियाई रिकॉर्ड समय के साथ स्वर्ण पदक जीता। कोरिया (तीन मिनट 32.05 सेकेंड) को रजत जबकि जापान (तीन मिनट 32.52 सेकेंड) को कांस्य पदक मिला।

नेहा ने पाल नौकायन में रजत अली ने कांस्य हासिल किया

सत्रह साल की भारतीय सेलर यानि पाल नाविक नेहा ठाकुर ने एशियाई खेलों में रजत पदक हासिल किया। स्वर्ण पदक थाईलैंड की नोपासोर्न खुनबूनजान ने जीता जबकि कांस्य सिंगापुर की कीरा मैरी कार्लाइल के नाम रहा। वहीं इस स्पर्धा में इबाद अली ने कांस्य पदक जीता जिससे भारत ने मंगलवार को यहां पाल नौकायन में दो पदक हासिल किये। नेहा ने लड़कियों की डिंगी आईएलसीए-4 स्पर्धा में दूसरा स्थान हासिल किया। सेलिंग में पुरुषों के विंडसर्फर आरएस एक्स वर्ग में 52 के नेट स्कोर के साथ कांस्य पदक हासिल किया। इस स्पर्धा का स्वर्ण कोरिया के वोनवू चो जबकि रजत थाईलैंड के नत्थाफोंग फोनोफैराट ने रजत पदक हासिल किया।

एशियाई खेल जूडोः तुलिका मान कांस्य पदक के मुकाबले में हारी

भारत की तुलिका मान मंगलवार को यहां एशियाई खेलों की जूडो प्रतियोगिता के महिलाओं के 78 किग्रा से अधिक वर्ग के कांस्य पदक के प्ले ऑफ में मंगोलिया की अमाराइखान अदियासुरेन के खिलाफ हार के साथ पदक जीतने से चूक गईं। राष्ट्रमंडल खेल 2022 की रजत पदक विजेता दिल्ली की 25 साल की तुलिका को यहां शियाओशैन लिन्पु जिम्नेजियम में अदियासुरेन के खिलाफ इप्पोन से 0-10 से हार का सामना करना पड़ा। इससे पहले तुलिका ने मकाऊ की किंग लैम लेई को इप्पोन से सिर्फ 15 सेकेंड में 10-0 से हराया था।

रोमांचक मुकाबले के बाद पदक से चूकी दिव्यांश और रमिता की जोड़ी

भारत के दिव्यांश पंवार और रमिता जिंदल की जोड़ी एशियाई खेलों की दस मीटर एयर राइफल मिश्रित स्पर्धा में मामूली अंतर से कांस्य पदक से चूक गई। दक्षिण कोरिया ने कड़े मुकाबले के बाद कांस्य पदक जीता। पार्क हाजुन और ली यूंसियो की कोरियाई जोड़ी ने 20.18 से जीत दर्ज की । महिलाओं के 25 मीटर पिस्टल वर्ग में मनु भाकर प्रिसिशन में शीर्ष पर थीं जबकि ईशा सिंह तीसरे स्थान पर हैं। रिदम सांगवान 11वें स्थान पर हैं। रैपिड वर्ग के मुकाबले बुधवार को होंगे। भारतीय तिकड़ी प्रिसिशन के बाद 876 अंक लेकर शीर्ष पर है।

वॉलीबॉल में पाकिस्तान ने भारत को हराकर दर्ज की जीत

चीन के हांगझोउ में चल रहे एशियन गेम्स 2023 के तीसरे दिन शाम होते-होते भारत को बड़ी निराशा हाथ लगी। चिर प्रतिद्वंदी पाकिस्तान से हुए वॉलीबॉल के अहम मुकाबले में भारत की टीम 3-0 से हार गई। इस हार के साथ भारत एशियाई खेलों में वॉलीबॉल प्रतियोगिता में छठे स्थान पर रहा। बता दें कि 1960 के बाद यह पहली बार है जब पाकिस्तान एशियाई खेलों में शीर्ष पांच टीमों में जगह बनाने में कामयाब रहा है। भारत की महिला वॉलीबॉल टीम अपने अभियान की शुरुआत शनिवार को उत्तर कोरिया के खिलाफ करेगी।

खबर संक्षेप

भारतीय मुक्केबाज सचिन और नरेंदर आगे बढ़े

हांगझोउ। भारतीय मुक्केबाज सचिन सिवाच और नरेंदर बेरवाल ने शानदार प्रदर्शन करते हुए मंगलवार को यहां एशियाई खेलों में

क्रमशः प्री क्वार्टर फाइनल और क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। सचिन ने इंडोनेशिया के असरी उदिन पर 5-0 से जीत दर्ज की, जबकि नरेंदर ने किर्गिस्तान के एलचोरो उलू ओमाटबेक को पहले राउंड में ही नॉकआउट कर दिया। सचिन का सामना कुवैत के तुर्की अबुकुतेलाह से होगा। उनका अगला मुकाबला ईरान के रमजानपुर डेलावर से होगा। नरेंदर ने अपने प्री-क्वार्टर फाइनल में एलचोरो पर जीत दर्ज की।

नागल, अंकिता क्वार्टर फाइनल में पहुंचे

हांगझोउ। भारतीय टेनिस खिलाड़ी सुमित नागल को दमदार सर्विस लगाने वाले बीबिट जुकायेव की चुनौती से पार पाने के लिए पसीना बहाना पड़ा जबकि अंकिता रैना ने आसानी से आदित्या पी करुणारत्ने को मात देकर मंगलवार को यहां एशियाई खेलों के क्वार्टर फाइनल में जगह पक्की की। ये दोनों खिलाड़ी अगर क्वार्टर फाइनल मुकाबला जीतने में सफल रहे तो उनका पदक पक्का हो जायेगा।

विश्व जूनियर बैडमिंटन चैंपियनशिप में भारत की विजयी शुरुआत

नई दिल्ली। भारत ने अमेरिका के स्पोकेन में चल रही विश्व जूनियर बैडमिंटन चैंपियनशिप की मिश्रित टीम स्पर्धा में कुक आईलैंड्स को 5-0 से हराकर अपने अभियान की शानदार शुरुआत की। सात्विक रेड्डी कनापुरम और वैष्णवी खडकेकर की मिश्रित युगल जोड़ी ने कैयिन मताइओ और तेरेपी अकावी को 21-6, 21-8 से हराकर भारत को शुरुआती बढ़त दिलाई। आयुष शेट्टी ने लड़कों के एकल मैच में डेनियल अकावी पर 21-6, 21-3 से प्रभावशाली जीत दर्ज की।

तीन मैचों की श्रृंखला में 2-0 से बढ़त, राजकोट में मैच दोपहर 1.30 बजे से

आज ऑस्ट्रेलिया को 'क्लीन स्वीप' कर इतिहास रचने उतरेगी भारतीय टीम

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

भारतीय क्रिकेट टीम और ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम के बीच 3 वनडे मैचों की सीरीज का आखिरी मुकाबला आज बुधवार को राजकोट में खेला जाएगा। मेजबान भारतीय टीम फिलहाल 2-0 से आगे रहकर सीरीज अपने नाम कर चुकी है। कप्तान रोहित शर्मा की नजरें आखिरी एक दिवसीय क्रिकेट मैच में जीत के साथ आस्ट्रेलिया का सूपड़ा साफ करके इतिहास रचने का भी है। भारत ने वनडे प्रारूप में कभी आस्ट्रेलिया का पूरा सफाया नहीं किया है। दोनों में से कोई भी टीम अपनी धरती पर या दूसरे की मेजबानी में भी यह श्रेय हासिल नहीं कर सकी हैं।

गौरतलब है कि विश्व कप से पहले अब टीम लगातार चौथी वनडे जीत की दहलीज पर है। यह श्रृंखला 3-0 से जीतने पर उसे पांच बार की विश्व चैम्पियन आस्ट्रेलिया पर मनोवैज्ञानिक बढत मिल जायेगी। आगामी वनडे विश्व कप 2023 की तैयारी के लिहाज से दोनों टीमों के लिए यह आखिरी वनडे मुकाबला होगा। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच होने वाला यह मैच आज 27 सितंबर बुधवार को सौराष्ट्र क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम राजकोट में खेला जाएगा। मैच भारतीय समयानुसार दोपहर 1:30 बजे से प्रारंभ होगा।

मैदान में ये खिलाड़ी दिखेंगे, ये नहीं

तीसरे वनडे मुकाबले में भारतीय टीम के स्टार खिलाड़ी विराट कोहली, रोहित शर्मा, हार्दिक पांड्या और कुलदीप यादव की वापसी हो रही है। शुभमन गिल और शार्दुल ठाकुर को इस मुकाबले से आराम दिया गया है। जसप्रीत बुमराह यह मुकाबला खेल सकते हैं।

इस संयोजन के साथ उतर सकता है ऑस्ट्रेलिया

ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम इस सीरीज में कुछ खास नहीं कर पाई है। डेविड वार्नर के फॉर्म को छोड़ दें तो टीम के लिए और कुछ भी अच्छा नहीं हुआ है। गेंदबाजों ने तो पूरी सीरीज में निराश किया है। आखिरी वनडे में मिचेल स्टार्क की टीम में वापसी हो सकती है।

ऑस्ट्रेलिया का पलड़ा रहा है भारी

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच अब तक वनडे क्रिकेट में कुल 148 बार भिड़ंत हो चुकी है। भारतीय टीम इनमें से 56 मैचों में जीत दर्ज की है, जबकि ऑस्ट्रेलिया ने बढ़त बनाते हुए 82 मैच जीते हैं। इस बीच, 10 मैच बेनतीजा भी रहे हैं। भारत की सरजमीं पर दोनों के बीच अब तक 69 मैच खेले गए हैं। यहां भारत ने 32 मैच जीते हैं और ऑस्ट्रेलिया ने भी 32 मैच जीते हैं, जबकि 5 में बेनतीजा रहे।

इन खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर रहेगी नजर

इशान ने पिछले 10 मुकाबलों में 46.29 की औसत से 324 रन बनाए हैं। वार्नर ने पिछले 8 मुकाबलों में 41.75 की औसत से 334 रन अपने नाम किए हैं। कुलदीप के नाम पिछले 7 मैच में 3.55 की इकॉनमी रेट से 12 विकेट है, वहीं जैम्पा ने पिछले 9 मैच में 15 विकेट झटके हैं। श्रेयस ने पिछले मैच में शतक लगाया था और राहुल के बल्ले से पिछले दोनों मैच में अर्धशतक निकले हैं।

भारत एकादश : रोहित शर्मा (कप्तान), केएल राहुल , श्रेयस अय्यर, ईशान किशन, सूर्यकुमार यादव, रविंद्र जडेजा, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज, मोहम्मद शमी, हार्दिक पंड्या, विराट कोहली, कुलदीप यादव, रविचंद्रन अश्विन, वाशिंगटन सुंदर।

आस्ट्रेलिया एकादश : पैट कमिंस (कप्तान), स्टीव स्मिथ, डेविड वॉर्नर, मार्नस लाबुशेन, एलेक्स कारी, जोश इंगलिस, मैथ्यू शॉर्ट, सीन एबोट, नाथन एलिस, कैमरन ग्रीन, जोश हेजलवुड, स्पेंसर जॉनसन, मिचेल मार्श, ग्लेन मैक्सवेल, तनवीर संघा, मिचेल स्टार्क, एडम जाम्पा।

न्यूजीलैंड ने बांग्लादेश में 15 साल बाद जीती वनडे सीरीज

▶▶ ढाका

न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम ने तीसरे वनडे में बांग्लादेश क्रिकेट टीम को 7 विकेट से हरा दिया। ढाका में हुए मैच में जीत के लिए मिले 172 रनों के लक्ष्य को न्यूजीलैंड ने विल यंग (70) की बदौलत हासिल किया। इसके साथ ही कीवी टीम ने 3 मैचों की सीरीज को 2-0 से जीत लिया। बता दें कि सीरीज का पहला वनडे मैच बारिश के कारण नहीं खेला जा सका था। बता दें कि न्यूजीलैंड की टीम ने बांग्लादेश की धरती पर लगभग डेढ़ दशक के अंतराल के बाद वनडे सीरीज जीती है। आखिरी बार कीवी टीम ने 2008 में मेजबान बांग्लादेश को 2-1 से हराया था।

न्यूजीलैंड ने दर्ज की जोरदार जीत

पहले बल्लेबाजी करते हुए बांग्लादेश के बल्लेबाजों ने निराश किया और पूरी टीम महज 34.3 ओवर में 171 रन पर ही सिमट गई। मेजबान टीम से कप्तान नजमुल हसन शांतो ने सर्वाधिक 76 रन बनाए। न्यूजीलैंड से एडम मिल्ने ने 4 विकेट लिए। जवाब में न्यूजीलैंड ने 49 रन तक अपने 2 विकेट खो दिए। इसके बाद यंग ने 70 रन की पारी खेली। उनके अलावा हेनरी निकोलस (50*) ने टीम को जीत दिलाई।

शांतो ने लगाया अपना 5वां अर्धशतक

बांग्लादेश ने पहले बल्लेबाजी करते हुए महज 8 रन के स्कोर तक अपने दोनों सलामी बल्लेबाजों के विकेट खो दिए। मुश्किल घड़ी में बल्लेबाजी के लिए आए शांतो ने एक छोर संभाले रखा और 55 गेंदों में अपना अर्धशतक पूरा किया। उन्होंने मुशफिकुर रहीम के साथ 53 रन और महमूदुल्लाह के साथ 49 रन की साझेदारी भी की। उम्दा बल्लेबाजी कर रहे शांतो 84 गेंदों में 76 रन बनाकर आउट हुए। उन्होंने अपनी पारी में 10 चौके लगाए।

महमूदुल्लाह के पूरे हुए 5,000 वनडे रन

महमूदुल्लाह ने 21 रन की पारी खेली और इस दौरान अपने वनडे करियर के 5,000 रन पूरे किए। वह बांग्लादेश की ओर से ये आंकड़ा छूने वाले सिर्फ चौथे बल्लेबाज बने। महमूदुल्लाह अब तमीम इकबाल, रहीम और शाकिब अल हसन की विशेष सूची में शामिल हो गए हैं। बता दें कि तमीम ने 243 वनडे मैचों में 8,357 रन, रहीम ने 256 मैचों में 7,406 रन और शाकिब ने 240 मैचों में 7,384 रन बनाए हुए हैं।

अश्विन को लेकर चयनकर्ताओं की सोच कुछ दिन में पता चल जाएगी

सुनील गावस्कर की कलम से

वर्ल्ड कप की तैयारियों को लेकर भारत के पास इंदौर वनडे में एक और कदम सही दिशा में उठाने का मौका होगा। श्रेयस अय्यर की फिटनेस को लेकर चिंताएं थीं लेकिन उन्होंने ऐसी जबरदस्त पारी खेली जिसकी वजह से शुभमन गिल का शतक भी पीछे हो गया। इस बात का महत्व इसलिए इतना ज्यादा है क्योंकि शुभमन गिल इस वक्त बेहद असाधारण फॉर्म में चल रहे हैं। ऐसी फॉर्म कि अगर उन्हें गहरी नींद से उठाकर भी बल्लेबाजी के लिए भेजा जाए तब भी वो इतनी ही सहजता से खेलेंगे। दोनों के बीच दोहरी शतकीय साझेदारी हुई जिसके शुरुआती समय में अधिकतर स्ट्राइक श्रेयस के पास थी। इस दौरान प्रचंड फॉर्म में चल रहे गिल ने जिस तरह अय्यर का हौसला बढ़ाया वो देखना सुखद था। भारतीय क्रिकेट के भविष्य के लिए ये अच्छा संकेत है कि इसके दो विध्वंसक बल्लेबाजों के बीच इतनी अच्छी समझ है। श्रेयस अय्यर ने मैदान पर पूरी ठसक के साथ कदम रखा जैसे वो प्लेइंग इलेवन में उनकी जगह को लेकर सवाल उठा रहे लोगों को गलत साबित करना चाह रहे हो। उन्होंने पूरे स्टाइल से साथ ऐसा किया भी। इस कड़ी में अय्यर ने कई ऐसे हवाई शॉट लगाए जिनसे घने से घने संदेह के बादल भी छंट गए।

भारत ने सिंगापुर को 16-1 से हराया, अब जापान से होगी भिड़ंत

हरमनप्रीत व मंदीप ने की गोलों की बौछार

एजेंसी ▶▶ हांगझोऊ

भारतीय पुरुष हॉकी टीम एशियाई खेलों के तीसरे दिन सिंगापुर के खिलाफ पूल ए के एक महत्वपूर्ण मैच में विपक्षी टीम पर पूरी तरह से हावी रही। भारत ने सिंगापुर को 16-1 से मात दे दी। इस गेम में कप्तान हरमनप्रीत ने शानदार हैट्रिक लगाई। उन्होंने चार गोल किए। इसके अलावा मनदीप ने भी हैट्रिक लगाई। ललित, गुजरांत, सुमित और विवेक ने भी गोल किए। खेल की शुरुआत में ही भारत के सामने सिंगापुर को संघर्ष करना पड़ा। भारत के खेल के 12वें मिनट में ही गोल हुआ जब मंदीप ने गोल कर दिया। फिर दूसरे क्वार्टर में 16वें मिनट में दूसरा गोल हुआ। इसके बाद 22वें और 23वें मिनट में एक और गोल ने टीम इंडिया की बढ़त 4-0 कर दी। 5वां गोल कप्तान हरमनप्रीत ने किया जिन्होंने पेनाल्टी कॉर्नर से गेंद को गोल पोस्ट में डाल दिया। हॉफ टाइम तक भारत का स्कोर 6-0 था।

तीसरे क्वार्टर में तीन मिनट में 3 गोल

तीसरे क्वार्टर में भी भारत का जलवा कायम रहा और लगातार तीन मिनट के अंदर तीन गोल किए गए। कप्तान हरमनप्रीत ने एक और गोल दागते हुए भारत की बढ़त को 9-0 कर दिया। इसके अगले दो मिनटों में हुए दो गोल ने तीसरे क्वार्टर में भारत की बढ़त को 14-0 कर दिया था। आखिरकार 53वें मिनट में सिंगापुर को एक गोल करने का मौका मिला लेकिन ये जश्न छोटा ही रहा क्योंकि भारतीय टीम ने जल्दी ही 16वां गोल भी करके दिखा दिया। भारत ने अपने 21वें पेनाल्टी कॉर्नर को गोल में तब्दील करके ये बढ़त बनाई।

नेपाल के बल्लेबाजों ने टी20 अंतरराष्ट्रीय में बनाए तीन विश्व रिकॉर्ड

पाल बुधवार को यहां एशियाई खेलों की क्रिकेट स्पर्धा में टी20 अंतरराष्ट्रीय में 300 से अधिक का स्कोर बनाने वाली पहली टीम बना और उसने मंगोलिया के खिलाफ मैच में तीन विश्व रिकॉर्ड बनाए। उन्नीस साल के बाएं हाथ के बल्लेबाज कुशाल मल्ला ने सिर्फ 34 गेंद में टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट का सबसे तेज शतक पूरा किया। उन्होंने डेविड मिलर और रोहित शर्मा के संयुक्त रूप से पिछले विश्व रिकॉर्ड को तोड़ा जिन्होंने 35 गेंद में शतक बनाया था। तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए कुशाल ने 12 छक्कों और आठ चौकों से नाबाद 137 रन की पारी खेली जिससे नेपाल ने पहले बल्लेबाजी करते हुए तीन विकेट पर 314 रन बनाए जो टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट का सर्वाच्च स्कोर है। नेपाल के पांचवें नंबर के बल्लेबाज दीपेंद्र सिंह ऐरी ने सिर्फ नौ गेंद में अर्धशतक बनाकर युवराज सिंह के 16 साल पुराने रिकॉर्ड को तोड़ा। युवराज ने 19 सितंबर 2007 को इंग्लैंड के खिलाफ विश्व टी20 मैच में 58 रन की पारी खेलने के दौरान 12 गेंद में अर्धशतक बनाया था। टी20 अंतरराष्ट्रीय में सर्वोच्च टीम स्कोर का पिछला रिकॉर्ड अफगानिस्तान के नाम था जिसने 23 फरवरी 2019 को आयरलैंड के खिलाफ तीन विकेट पर 278 रन बनाए थे।

कावेरी का जल छोड़े जाने का विरोध

बेंगलुरु में कर्नाटक के बांधों से तमिलनाडु के लिए कावेरी नदी का जल छोड़े जाने के खिलाफ मंगलवार को किसानों और कन्नड़ संगठनों द्वारा बुलाए गए 'बंद' के दौरान कलसीपाल्या बस स्टैंड पर बसें खड़ी रहीं। वहीं प्रदर्शनरत एक कार्यकर्ता को पुलिस कर्मियों ने हिरासत में ले लिया।

राजनीतिक सहूलियत से आतंकवाद पर एक्शन नहीं ले

जयशंकर ने दी कनाडा को सख्त नसीहत

न्यूयॉर्क। संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित करते हुए विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कनाडा को नसीहत दी है। साथ ही दुनिया के बड़े ताकतवर देशों को भी इशारों ही इशारों में जाता दिया कि वह दिन पुराने हो गए जब भारत को आँख दिखाया जाता था।

उन्होंने कहा कि सियासी सहूलियत के हिसाब से आतंकवाद, चरमपंथ और हिंसा पर एक्शन नहीं लेना चाहिए। अपनी सहूलियत के हिसाब से क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान और आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं हो सकता। अभी भी कुछ देश ऐसे हैं, जो एक तय एजेंडे पर काम करते हैं लेकिन ऐसा हमेशा नहीं चल सकता और इसके खिलाफ आवाज उठाई जानी चाहिए। जब वास्तविकता, बयानबाजी से कोसों दूर हो जाती है तो हमारे भीतर इसके खिलाफ आवाज उठाने का साहस होना चाहिए। यूएन में विदेश मंत्री में एस। जयशंकर ने कहा कि ऐसे समय में जब पूर्व-पश्चिम ध्रुवीकरण इतना तीव्र है और उत्तर-दक्षिण विभाजन इतना गहरा है, नई दिल्ली शिखर सम्मेलन भी इस बात की पुष्टि करता है कि कूटनीति और संवाद ही एकमात्र प्रभावी समाधान हैं।।। वे दिन खत्म हो गए हैं जब कुछ देश एजेंडा तय करते थे और दूसरों से उसके अनुरूप चलने की उम्मीद करते थे

नमस्ते फ्रॉम भारत...इंडिया दैट इज...

जयशंकर ने ऐसे किया संबोधन का आगाज और अंत

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने मंगलवार को संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएन) को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने आतंकवाद, चरमपंथ और हिंसा का जिक्र करते हुए कहा कि इसके खिलाफ सबको साथ आना होगा। उन्होंने कनाडा से चल रहे विवाद की तरफ भी इशारा किया। एस जयशंकर ने यूएनजीए में भाषण की शुरुआत नमस्ते फ्रॉम भारत से की। उन्होंने स्पीच खत्म करते हुए '**इंडिया दैट इज भारत**' कहा। दरअसल संविधान के अनुच्छेद 1 में भी '**इंडिया दैट इज भारत**' लिखा हुआ है।

एस जयशंकर ने ये जिक्र ऐसे समय में किया है जब हाल ही में जी-20 के डिनर निमंत्रण पत्र 'प्रेसिडेंट ऑफ इंडिया' की जगह 'प्रेसिडेंट ऑफ भारत लिखा था'। भारत और इंडिया को लेकर इसी के बाद नए सिरे से चर्चा शुरू हुई। विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' ने केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि ये नाम बदलना चाहते हैं। ये हमारे नाम से घबरा गए हैं। इसके बाद जी 20 की बैठक में बने डेस्क पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बैठने वाली जगह पर इंडिया की जगह भारत लिखा हुआ था। एस जयशंकर ने विश्व मित्र और अमृतकाल जैसे शब्दों का भी इस्तेमाल किया। उन्होंने कहा कि जब हम सामूहिक प्रयास को प्रोत्साहित करते हैं, तब भारत विविध साझेदारों के साथ सहयोग को बढ़ावा देने का प्रयास करता है। गुटनिरपेक्ष के दौर से आगे बढ़कर हमने विश्वमित्र की अवधारणा विकसित की है।

मंडेला की पोती जोलेका का 43 वर्ष की उम्र में निधन

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दक्षिण अफ्रीका के पहले लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला की पोती जोलेका मंडेला की 43 वर्ष की आयु में कैंसर से मृत्यु हो गई है। उन्होंने सोमवार शाम अपने परिवार, दोस्तों के बीच अंतिम सांस ली। अपने आखिरी दिनों में ज़ोलेका मंडेला, दुनियाभर के लोगों को अपने कैंसर उपचार के बारे में बताया करती थी। साथ ही अपने नशीली दवाओं की लत के बारे में भी लोगों को बताया करती थीं। उन्होंने दुनियाभर में काफी पहचान हासिल कर ली थी। मंडेला फाउंडेशन ने जोलेका मंडेला के काम को काफी प्रेरणादायक बताया है।

पंकजा की फैक्टरी को 19 करोड़ का जीएसटी नोटिस

मुंबई, (एजेंसी)। भाजपा से साइडलाइन की गई पंकजा मुंडे को एक और झटका लगा है। उनके कारखाने को 19 करोड़ के जीएसटी बकाया का नोटिस मिला है। जीएसटी नहीं भरा तो उनके कारखाने की संपत्ति को कुर्क किया जाएगा। वहीं पूर्व मंत्री पंकजा ने किसी भी गलत काम से इनकार करते हुए कहा कि उनका कारखाना वित्तीय संकट से गुजर रहा है। पंकजा ने केंद्र पर भी परोक्ष रूप से निशाना साधा है। उन्होंने कहा सहकारी विभाग से वित्तीय मदद के लिए आवेदन करने वाले अन्य कारखानों को मदद दी गई लेकिन केवल उनका कारखाना ही इसमें शामिल नहीं था।

दिल्ली में आधी रात 25 करोड़ की सोने के गहने चोरी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दक्षिणी दिल्ली के जंगपुरा इलाके में सोमवार रात चोरों ने एक महाचोरी को अंजाम दिया। भोगल इलाके में मौजूद ज्वैलरी शोरूम में सेंध लगाकर चोर 25 करोड़ के गहने चोरी करके ले गए। पुलिस ने कहा कि रात को शटर बंद करने के बाद सुबह जब शोरूम के मालिक ने सुबह इसे खोला तो घटना सामने आई और उन्होंने पुलिस को इसकी सूचना दी। पुलिस चोरों का सुराग पता लगाने की कोशिश में जुटी है। शोरूम मालिक का दावा है कि करीब 20-25 करोड़ के गहने चोर अपने साथ ले गए, जो हीरे और सोने के थे।

बारामूला में दो आतंकी मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया

श्रीनगर, (एजेंसी)। सुरक्षा बलों ने जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले में दो बड़े आतंकी मॉड्यूल का भंडाफोड़ करके एक आतंकवादी और दो महिलाओं समेत आठ सहयोगियों को गिरफ्तार किया है। मॉड्यूल नियंत्रण रेखा के पार से तस्करी कर लाए गए हथियारों को लश्कर-ए-तैयबा के आतंकियों को आपूर्ति करने में शामिल था। जिले में हाल के दिनों में इन दो मॉड्यूल के भंडाफोड़ से बलों को बड़े आतंकवादी हमलों को नाकाम करने में मदद मिली है। एसएसपी बारामूला ने कहा कि पहले मॉड्यूल का भंडाफोड़ 14 सितंबर को किया गया था, जिसमें पुंछ जम्मू के एक निवासी सहित तीन आतंकी सहयोगियों की गिरफ्तारी हुई थी।

आज का इतिहास

- 1290: चीन के चिली की खाड़ी में भूकंप से करीब एक लाख लोगों की मौत हुई।
- 1760: मीर कासिम बंगाल के नवाब बने।
- 1821: मैक्सिको को स्वतंत्रता मिली।
- 1825: इंग्लैंड में स्टॉकटन-डार्लिंगटन लाइन की शुरुआत के साथ दुनिया का पहला सार्वजनिक रेल परिवहन शुरू।
- 1833: राम मोहन राय का इंग्लैंड के ब्रिस्टल में निधन।
- 1932: मशहूर निर्देशक यश चोपड़ा का जन्म हुआ।
- 1940: द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान इटली, जर्मनी एवं जापान ने धूरी राष्ट्र के समझौते पर हस्ताक्षर किया।
- 1958: मिहिर सेन ब्रिटिश चैनल तैरकर पार करने वाले पहले भारतीय बने।
- 1961: सिएरा लियोन संयुक्त राष्ट्र का सौवां सदस्य बना।
- 1988: यूएस अंतरिक्ष यान डिस्कवरी का केप कैनेवरल से प्रक्षेपण।

हिन्द प्रशांत क्षेत्र में शांति और स्थिरता अमेरिका की प्राथमिकता में शामिल

नईदिल्ली ■ ब्यूरो

अमेरिका ने हिन्द प्रशांत को सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र बताते हुए कहा है कि यहां शांति, स्थिरता और नियम आधारित व्यवस्था उसकी प्राथमिकता है।

अमेरिकी सेना प्रमुख जनरल रेंडी जॉर्ज ने मंगलवार को यहां हिन्द प्रशांत क्षेत्र के देशों के सेना प्रमुखों के 13वें द्विवर्षिक सम्मेलन से इतर संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में सवालों के जवाब में यह बात कही। भारतीय सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे ने कहा कि इस सम्मेलन को सैन्य गठजोड़ बनाने की दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए क्योंकि यह किसी एक देश या कुछ देशों के समूह के खिलाफ नहीं है। हिन्द प्रशांत देशों के सेना प्रमुखों के 13वें सम्मेलन का आयोजन भारत और अमेरिका यहां संयुक्त रूप से कर रहे हैं। जनरल जॉर्ज ने कहा कि हिन्द प्रशांत क्षेत्र अमेरिका की प्राथमिकता है और इसीलिए वह इस क्षेत्र के मित्र देशों के साथ साझेदारी बढ़कर सहयोग को पुख्ता करने के प्रयास कर रहा है। उन्होंने कहा कि अमेरिकी सेना इस क्षेत्र में विभिन्न सहयोगी देशों के साथ विभिन्न तरह के सैन्य अभ्यासों में हिस्सा ले रही । अभ्यास का उद्देश्य सेना के कौशल तथा क्षमता को बढ़ाना और सर्वोत्तम अनुभव को साझा करना है।

सम्मेलन का उद्देश्य परस्पर साझेदारी को मजबूत करना : जनरल पांडे

जनरल पांडे ने एक सवाल के जवाब में स्पष्ट किया कि इस तरह के सम्मेलन का आयोजन किसी तरह का सैन्य गठजोड़ बनाने के लिए नहीं है और ना ही यह किसी एक देश या कुछ देशों के समूह के खिलाफ है। इस सम्मेलन का उद्देश्य परस्पर विश्वास के आधार पर साझेदारी को मजबूत करना तथा एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझते हुए साझेदारी तथा मित्रता को पुख्ता करना है । उन्होंने कहा कि बदलती परिस्थितियों में हिन्द प्रशांत क्षेत्र की भूमिका निरंतर महत्वपूर्ण हो रही है तथा हिंद प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता और शांति सभी की साझा जिम्मेदारी है।

हिंद प्रशांत की जटिल चुनौतियों से मिलकर निपटेंगे : राजनाथ

नई दिल्ली, (एजेंसी)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने हिन्द प्रशांत क्षेत्र की जटिल चुनौतियों से मिलकर निपटने का आह्वान करते हुए मंगलवार को कहा कि इससे समृद्ध , सुरक्षित और समावेशी भविष्य को सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी। श्री सिंह मंगलवार को यहां हिन्द प्रशांत क्षेत्र के देशों के सेना प्रमुखों के 13वें द्विवार्षिक सम्मेलन में उद्घाटन भाषण दे रहे थे। तीन दिन के इस सम्मेलन का आयोजन भारतीय सेना और अमेरिकी सेना ने मिलकर किया है। इस मौके पर प्रमुख रक्षा अध्यक्ष जनरल अनिल चौहान, थल सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे, वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वी आर चौधरी , नौसेना प्रमुख एडमिरल आर हरि कुमार तथा अमेरिकी सेना के प्रमुख सहित 20 देशों की सेनाओं के प्रमुख और 35 देशों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

22 जनवरी को होगी अयोध्या में राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा

नई दिल्ली (एजेंसी)। अयोध्या में भगवान राम के मंदिर का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। ऐसे में मंदिर निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्रा ने कहा है कि तीन मंजिला राम मंदिर के भूतल का निर्माण दिसंबर के अंत तक पूरा हो जाएगा और प्रतिष्ठा समारोह 22 जनवरी को होगी। राम मंदिर के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येन्द्र दास जी महाराज ने बताया कि 15 जनवरी से 24 जनवरी को अनुष्ठान होगा। हमारी ओर से पीएमओ को पत्र लिखा गया और इसपर जवाब भी आ गया है। अब यह तय हो चुका है कि 22 तारीख को प्रधानमंत्री मोदी अयोध्या आएंगे, तो प्राण प्रतिष्ठा 22 तारीख को ही होगी। इस कार्यक्रम के लिए और भी लोगों को बुलाया गया है।

कुछ यूं अनोखा होगा राम मंदिर

नृपेंद्र मिश्रा ने यह भी कहा कि एक उपकरण डिजाइन करने पर काम चल रहा है, जिसे मंदिर के शिखर पर स्थापित किया जाएगा, जिससे हर साल राम नवमी के दिन गर्भगृह में देवता के माथे पर सूर्य की किरणें क्षण भर के लिए पड़ेंगीं। इसे बेंगलुरु में बनाया जा रहा है और इसके डिजाइन की देखरेख वैज्ञानिक कर रहे हैं। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की और पुणे के एक संस्थान ने संयुक्त रूप से इसके लिए एक कम्प्यूटरीकृत कार्यक्रम बनाया है।

प्रधानमंत्री मोदी के लिफाफे से जब निकले 21 रुपए...

भीलवाड़ा, (एजेंसी)। राजस्थान के भीलवाड़ा में 28 जनवरी 2023 को भगवान श्री देवनारायण जी के 1111वें अवतरण महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह को संबोधित करने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहुंचे थे। पीएम मालासेरी डूंगरी मंदिर दर्शन, परिक्रमा की और नीम का पौधा भी लगाया था। उन्होंने यज्ञशाला में चल रहे विष्णु महायज्ञ में पूर्णाहुति भी दी थी। गुर्जर समाज के आराध्य देव भगवान देवनारायण मंदिर के दान पात्र में डाले गए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिफाफे को 09 माह के बाद खोला गया। इस लिफाफे में 21 रुपए निकले। दान पत्र में दो अन्य लिफाफे में भी निकले। एक में 101 रुपए और दूसरे में 2100 रखे हुए थे।

और छिड़ गई लिफाफे पर राजनीति

आशीष को दिल्ली में रहने की छूट

नई दिल्ली, (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को केंद्रीय मंत्री अजय मिश्रा के बेटे एवं लखीमपुर खीरी हिंसा मामले के मुख्य आरोपी आशीष मिश्रा की जमानत शर्तों में ढील दे दी।

सुप्रीम कोर्ट ने यह ढील उन्हें अपनी बीमार मां की देखभाल और अपनी बेटी का इलाज के लिए दिल्ली जाने और वहां रहने की अनुमति दे दी। जस्टिस सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली वाली पीठ ने याचिकाकर्ता की ओर से पेश वरिष्ठ वकील सिद्धार्थ दवे की दलीलें सुनने के बाद यह आदेश पारित किया।

पंजाब के पूर्व वित्त मंत्री बादल के खिलाफ लुकआउट नोटिस

नई दिल्ली, (एजेंसी)। पंजाब के पूर्व वित्त मंत्री मनप्रीत सिंह बादल के खिलाफ लुकआउट नोटिस जारी किया गया है। पंजाब विजिलेंस ब्यूरो के वरिष्ठ अधिकारी ने बताया है कि मनप्रीत सिंह बादल पर बठिण्डा में संपत्ति खरीदने के लिए कथित तौर पर वित्तीय अनियमितता बरतने के आरोप हैं।

वित्तीय अनियमितता बरतने का आरोप

मनप्रीत बादल जनवरी में कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हो गए थे। पंजाब विजिलेंस ब्यूरो की टीम ने मनप्रीत बादल को गिरफ्तार करने के लिए मुक्तसर में उनके घर पर छापेमारी की थी। इस छापेमारी के बाद सोमवार को उनके खिलाफ लुकआउट नोटिस जारी किया गया है। पंजाब विजिलेंस ब्यूरो ने प्रॉपर्टी खरीद के इस मामले में मनप्रीत बादल और पांच लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया है। मनप्रीत के अलावा बठिण्डा डेवेलपमेंट अथॉरिटी प्रमुख प्रशासक बिक्रमजीत शेरगिल, राजीव कुमार, अमनदीप सिंह, विकास अरोड़ा और पंकज को नामजद अभियुक्त बनाया गया है।

डीएसपी जिया उल हक हत्याकांड में सीबीआई करेगी भूमिका की जांच

राजा भैया को सुप्रीम कोर्ट से झटका

प्रयागराज, (ब्यूरो)। प्रतापगढ़ में मारे गए डीएसपी जिया उल हक की हत्या में कुंडा विधायक रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया की भूमिका की जांच सीबीआई करेगी। डीएसपी जिला उल हक की 2013 में नृशंस हत्या कर दी गई थी। डीएसपी की पत्नी की ओर से दायर याचिका पर फैसला देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने पिछले साल इलाहाबाद हाईकोर्ट द्वारा दिए गए आदेश को रद कर दिया है।

हाईकोर्ट ने ट्रायल कोर्ट के आदेश पर रोक लगाई थी। ट्रायल कोर्ट ने राजा भैया और उनके चार साथियों के खिलाफ सीबीआई की क्लोजर रिपोर्ट को खारिज करते हुए जांच जारी रखने का आदेश दिया था।

न्यायमूर्ति अनिरुद्ध बोस और बेला एम त्रिवेदी की पीठ ने कहा कि हमारे विचार में उच्च न्यायालय ने पुन जांच और आगे की जांच के बीच एक अति तकनीकी दृष्टिकोण अपनाया है। उच्च न्यायालय ने माना कि विशेष सीबीआई अदालत का 8 जुलाई 2014 का आदेश पुनः जांच के समान है।

क्रायो अपर स्टेज इंजन हॉट टेस्ट सफल

गगनयान मिशन

चेन्नई। गगनयान मिशन कार्यक्रम में एक महत्वपूर्ण क्षण को चिह्नित करते हुए इसरो ने उच्च स्तर के 22-टन थ्रस्ट क्वालिफिकेशन और सीई20 ई13 इंजन हॉट टेस्ट सफलतापूर्वक आयोजित किया है। इसके साथ ही एक महत्वपूर्ण घटक इंजन के साथ क्रायोजेनिक अपर स्टेज (सीयूएस) अब गगनयान मिशन और भविष्य के प्रयासों इसरो ने मंगलवार को कहा कि लिक्विड प्रोपल्शन सिस्टम सेंटर (एलपीएससी), वलियामाला द्वारा विकसित इंजन का परीक्षण 22 सितंबर को इसरो प्रोपल्शन कॉम्प्लेक्स (आईपीआरसी), महेंद्रगिरि में किया गया था। सीई20 इंजन एक महत्वपूर्ण घटक है, जो एलएमवी-3 वाहन के ऊपरी चरण (सी-25) को चलाने के लिए जिम्मेदार क्रायोजेनिक अपर स्टेज (सीयूएस) के पावरहाउस के रूप में कार्य करता है।

भाजपा नेता शाहनवाज को आया हार्ट अटैक

नई दिल्ली। पूर्व केंद्रीय मंत्री और भाजपा के सीनियर लीडर शाहनवाज हुसैन को 26 सितंबर की शाम करीब 4 बजे हार्ट अटैक आया। उन्हें मुंबई के लीलावती अस्पताल में भर्ती कराया गया है। लीलावती अस्पताल के डॉक्टर जलील पारकर ने कहा कि दिल का दौरा पड़ने की वजह से शाहनवाज हुसैन को भर्ती कराया गया है। उनकी एंजियोप्लास्टी की गई है। फिलहाल वे आईसीयू में हैं, जल्द ही उन्हें प्राइवेट वार्ड में शिफ्ट किया जाएगा। शाहनवाज हुसैन मुंबई बीजेपी अध्यक्ष और बांद्रा के विधायक आशीष शेलार के घर पर मौजूद थे।

मणिपुर में सुरक्षाबलों से झड़प में 53 छात्र घायल

जुलाई से लापता दो छात्रों की हत्या के विरोध में कर रहे थे प्रदर्शन

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर के इंफाल शहर में मंगलवार को सुरक्षाबलों और स्टूडेंट्स के बीच झड़प हो गई। इसमें 1 टीचर सहित 54 छात्र घायल हो गए।

छात्र जुलाई से लापता दो स्टूडेंट्स की हत्या के विरोध में प्रदर्शन कर रहे थे।

मणिपुर में पांच दिन नेट बंद

सभी घायलों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इंफाल में विरोध प्रदर्शन के बीच पांच दिनों के लिए इंटरनेट सर्विस बंद हुई। सूत्रों का कहना है कि बुधवार को सीबीआई के स्पेशल डायरेक्टर अजय भटनागर इंफाल में दो छात्रों की हत्या की जांच करेंगे। 1अक्टूबर को शाम 7.45 तक इंटरनेट बैन किया गया है। राज्य में 23 सितंबर को मोबाइल इंटरनेट से बैन हटने के बाद दो स्टूडेंट्स के शवों की फोटो सामने आई थी, जो सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। फोटो में दोनों की बॉडी जमीन पर पड़ी हुई नजर आ रही है।

मणिपुर सरकार ने कहा- मामले की जांच सीबीआई कर रही

मुख्यमंत्री ऑफिस के सूत्रों ने बताया कि सरकार ने कहा है कि जो भी दोषी हैं, उन पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। फिलहाल मामले की जांच सीबीआई कर रही है। सुरक्षा बलों ने अपराधियों को पकड़ने के लिए तलाशी अभियान भी शुरू कर दिया है। लोगों से अपील की गई है कि मामले में संयम बरतें और जांच एजेंसियों को अपना काम करने दें।

Filmiतड़का

जिगरा के टीजर में दिखा आलिया भट्ट की हिट फिल्मों का कनेक्शन

मुंबई। आलिया भट्ट ने अपने अभी तक के करियर में अलग-अलग किरदार निभाए हैं। 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर' से करियर की शुरुआत करने वाली आलिया की मुख्य फिल्मों में 'उड़ता पंजाब', '2 स्टेट्स', 'राजी', 'डार्लिंग्स', 'गंगूबाई काठियावाड़ी' और 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' सहित अन्य हैं। मंगलवार को आलिया की अपकमिंग फिल्म का टाइटल और टीजर रिलीज किया गया। धर्मा प्रोडक्शंस की इस फिल्म का नाम 'जिगरा' है। फिल्म को वासन बाला निर्देशित करेंगे। फिल्म का टीजर 1 मिनट 3 सेकेंड का है जिसमें फैन्स को कुछ खास दिखा। पहली बार देखकर शायद आप भी यह नोटिस नहीं कर पाएं लेकिन ध्यान से देखने पर पता चलता है। 'जिगरा' में आलिया एक्शन अवतार में होंगी। टीजर से भी यह पता चलता है। फिलहाल तो वीडियो में फैन्स को आलिया की पिछली कई हिट फिल्मों का कनेक्शन दिखा। इनमें 'डार्लिंग्स', 'हाईवे', '2 स्टेट्स' और 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर' शामिल हैं। जैसे ही फिल्म का टीजर आया फैन क्लब की निगाहें उस पर गईं जहां टीजर में जगह-जगह फिल्म का नाम दिखता है।

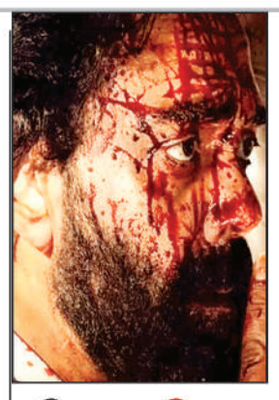

फिल्म एनिमल से बॉबी देओल का फर्स्ट लुक पोस्टर रिलीज

मुंबई। बॉलीवुड अभिनेता बॉबी देओल की आने वाली फिल्म एनिमल से उनका फर्स्ट लुक रिलीज हो गया है। संदीप रेड्डी वांगा निर्देशित एनिमल में रणबीर कपूर,अनिल कपूर, रश्मिका मंदाना, बॉबी देओल और तृप्ति डिमरी जैसे कलाकार प्रमुख भूमिका में हैं। फिल्म'एनिमल'से बॉबी देओल का फर्स्ट लुक पोस्टर रिलीज कर दिया गया है एनिमल के नए पोस्टर में बॉबी देओल खून से सने हुए नजर आ रहे हैं। बॉबी देओल का चेहरा खून के छींटों से भरा हुआ है और वह हाथ से चुप रहने का इशारा कर रहे हैं। बॉबी देओल के इस फर्स्ट लुक के साथ कैप्शन में लिखा है,जानवर के हर दुश्मन के अंदर भी एक जानवर छिपा होता है... ये याद रखना बेटा !!! वहीं फिल्म एनिमल 01 दिसंबर को रिलीज होगी। फिल्म एनिमल भूषण कुमार और कृष्ण कुमार की टी-सीरीज, मुराद खेतानी की सिने1 स्टूडियोज़ और प्रणय रेड्डी वांगा की भद्रकाली पिक्चर्स द्वारा निर्मित है।

जानवर के हर दुश्मन के अंदर भी एक जानवर छिपा होता है... ये याद रखना बेटा!!!

ऊर्जा बचाओ प्रदूषण भगाओ विषयक संगोष्ठी का आयोजन

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। चाँदमारी स्थित होटल ओम विलास बनारस में 27 सितम्बर गुरुवार कों Alliance for an Energy Efficient Economy (AEEE), पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग एवं यूपी नेडा (UPNEDA) द्वारा यह कार्यक्रम आयोजित किया गया इस कार्यक्रम का उद्देश्य हमारे शहर के सूक्षम, लघु और मध्यम उद्यमियों को ऊर्जा संरक्षण के प्रति जागरूक करना और उत्कृष्ट तकनीकों के बारे में अवगत कराना जिससे की हमारे उद्यमी बन्दुओ को अपने उद्योगों को ऊर्जा कुशलता के साथ बेहतर ढंग से आगे बढ़ा सके जैसा की आप सब अवगत होगें की भारत ने जनवायु परिवर्तन से किए जो प्रतिवद्धता ली है और उसे विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंच पर दोहराया है` ऊर्ज दक्षता आज के परिवेश में नित्यंत आवश्यक मुददा है जिससे समय समय पर केन्द्र सरकार के साथ राज्य सरकारे भी विभिन्न कार्यक्रम के माध्यम से उद्योगो को जागरूक करता रहता है` यह कार्यशाला उसी कड़ी में एक और कड़ी हैं। इस प्रयास को आगे बढ़ाते

हुए Alliance for.an Energy Efficient. Economy (AEEE), उत्तर प्रदेश में एमएसएमई (MSME) क्षेत्र पर एक अध्ययन करा रहा है जिसका उद्देश्य है कि उत्तर प्रदेश के उन क्षेत्रों को पहचाना जाए जहाँ नवीनीकरण आर्य ऊर्जा कुशलता, वैकल्पिक ईंधन, कार्बन कैचर और अन्य स्वच्छ प्रौद्योगिकियों जैसे कम कार्बन के उपायों को लागू किया जा सकता है इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है कि उत्तर प्रदेश को उद्योग सेक्टर की कार्बन मुक्ति के लिए एक न्यून- कार्बन विकास पथ को अपनाने के लिए प्रमुख बनाया जाए इस अध्ययन के माध्यम से उत्तर प्रदेश को जलवायु परिवर्तन से निपटने के मामले में एक लीडर बनाने के लिए कठिनाईओं का समाधान ढूंढ़ने का प्रयास किया जा रहा है` राज्य के अधोयोगिक क्षेत्र की कार्बन मुक्ती के लिए एक न्यून-कार्बन विकास पथ को स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं इसके माध्यम से न केवल जलवायु परिवर्तन के खिलाफ उपयोगी कदम उठाया जा रहा है एवं उत्तर प्रदेश को उद्योग सेक्टर में एक प्रौद्योगिकी और प्रदूषण मुक्त भविष्य की और बढ़ा रहे है` ईंट उत्पादन में अक्षय ऊर्जा का प्रयोग करने और उन्नत प्रौद्योगिकियों का अधिग्रहण करने के माध्यम से इस क्षेत्र की कार्बन मुक्ति की दिशा में कदम बढ़ाये जा रहे हैं इसके अलावा ईंट उत्पादन में जलवायु परिवर्तन को खिलाफ संवेदनशीलता और उन्नत प्रौद्योगिकियों की अदिग्रहण के माध्यम से कार्बन प्रबलीकरण की दिशा में कदम बढ़ाकर उत्तर प्रदेश को ग्लोबल स्तर पर इस क्षेत्र के लीडर के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है इस कार्यक्रम में वाराणसी, गाजीपुर, भदोई और जौनपुर के प्रतिनोदिओ ने भाग लिया।

स्वच्छता पखवारा के तहत आधा दर्जन गावों में चला विशेष अभियान

प्रखर सहजनवा पिपरौली गोरखपुर। स्वच्छता अभियान के अंतर्गत पिपरौली ब्लॉक के आधा दर्जन गावों में सफाई कर्मियों की टीम बनाकर साफ सफाई कराई गई। ब्लॉक के एकला, बरहुंआ,कैली, कलानी खुर्द, बनौडा,छपिया गावों में सफाई कर्मियों की टीम ने सार्वजनिक जगहों पंचायत भवन,विद्यालय, एएनएम सेंटर और धार्मिक स्थलों को सफाई की गई। बुधवार को एडीओ पंचायत अरविंद सिंह द्वारा छपिया में स्वच्छता अभियान का निरीक्षण किया गया। गांव की सफाई देखकर एडीओ पंचायत ने संतुष्टि जताई। उन्होंने कहा स्वच्छता से ही सुरक्षा है, संक्रमण से बचाव के लिए शरीर के अलावा अपने आसपास के क्षेत्र को भी स्वच्छ करना बहुत जरूरी है संक्रमण को रोकने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता अभियान चलाकर साफ-सफाई कराई जा रही है । ग्रामीण अंचल की सफाई अभियान पंचायत सचिव और गांव के प्रधान की देखरेख में चलाया जा रहा है। 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक शासन के निर्देशन पर ग्राम पंचायतों में विशेष साफ सफाई अभियान चल रहा है।इस दौरान अजय जैसवाल,अजय यादव, लाल बहादुर,राजेश,यादवेंद्र, संजीव सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

आज आएंगे एल0जी0 मनोज सिन्हा

लोकार्पण के लिए तैयार ग्राम सचिवालय और डाक बंगला

जखनियां गाजीपुर। अगर क्षेत्र में विकास को सुन्दर तरीके से गतिमान किया जाए और लोगों को मुकम्मल विकास का अहसास हो तो हर किसी के जुबान से तारीफ मिलना लाजिमी है। ऐसा ही कुछ है क्षेत्र के गोविंद और अलीपुर मदरा में। पंचायत मुखिया द्वय द्वारा कराया गया कार्य जिसमें नव निर्मित ग्राम सचिवालय पंचायत भवन का भव्य उद्घाटन समारोह आज वृहस्पतिवार को आयोजित है। जिसके मुख्य अतिथि के रूप में माननीय मनोज सिन्हा महा महीम उप राज्यपाल जम्मू-कश्मीर उपस्थित रहेंगे।साथ ही उन्हीं के कर कमलों द्वारा लोकार्पण किया जाएगा। जिसके संदर्भ में मदरा ग्राम प्रधान प्रतिनिधि झुन्ना सिंह और जखनियां प्रधान प्रतिनिधि अशोक गुप्ता द्वारा लोगों को जानकारी देते हुए कार्यक्रम

में उपस्थित होने का आग्रह पूर्वक निवेदन किया गया है। भाजपा व्यापार मंडल के अध्यक्ष प्रमोद वर्मा के मुताबिक माननीय एल जी मनोज सिन्हा के आगमन और उनके द्वारा लोकार्पण कार्यक्रम को लेकर जहां पार्टी कार्यकताओं में खुशी है वहीं स्थानीय जन-गण-मन में उत्साह है। कार्यक्रम में कैबिनेट मंत्री अनिल राजभर के अलावा राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार गिरीश चंद्र यादव भी उपस्थित रहेंगे। गौरतलब है कि लोकार्पण के लिए तैयार ग्राम सचिवालय विकास खंड क्षेत्र के अन्य निर्मित ग्राम सचिवालयों से इतर होते हुए अद्भुत और आकर्षक है।जिसे देख हर कोई ग्राम पंचायत मुखिया को दाद देने से नहीं अघा रहा।

औराई नेचुरल फार्मिंग प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड की वार्षिक आम बैठक आयोजित की गई

प्रखर औराई। नेशनल एग्रो फाउंडेशन और नाबार्ड द्वारा संचालित औराई नेचुरल फार्मिंग प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड ग्राम गंभीरसिंहपुर औराई भदोही पर वार्षिक आम बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में एफपीओ में हुए वार्षिक कार्यों पर विस्तृत चर्चा की गई। नाबार्ड के डीडीएम लल्लन कुमार ने औराई नेचुरल फार्मिंग प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड की वार्षिक आम बैठक कार्यकम में एफपीओ के किसानों और एफपीओ के अंशधारकों से बातचीत करके उनसे एफपीओ में हुए वार्षिक प्रगति पर विस्तृत चर्चा की। साथ ही उन्होंने एफपीओ की नई योजनाओं को लेकर किसानों से विस्तृत बात भी की। साथ ही नाबार्ड की नई योजनाओं की भी जानकारी किसानों को दी गई। औराई नेचुरल फार्मिंग प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड की वार्षिक आम बैठक में मुख्य अतिथि

के रूप में नाबार्ड के डीडीएम लल्लन कुमार पहुंचे थे। एफपीओ के किसानों द्वारा उनका माल्यार्पण कर जोरदार स्वागत किया गया। औराई नेचुरल फार्मिंग प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड की वार्षिक आम बैठक में उपस्थित जनों में नाबार्ड के डीएम जिला विकास अधिकारी लल्लन कुमार, वीरेंद्र मौर्य, श्रमिक भारती से रविंद्र द्विवेदी सत्य प्रकाश अजीत सिंह पीयूष सिंह संदीप कुमार आशुतोष सिंह व एफपीओ के सभी सम्मानित किसान और महिलाएं उपस्थित रहे।

टिकरी में एनसीडीसी द्वारा आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सकुशल संपन्न

प्रखर लंका/वाराणसी। कृषक उत्पादक संगठन टिकरी में अध्यक्ष ई० अमित सिंह की देखरेख में एनसीडीसी द्वारा आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम बुधवार को सकुशल संपन्न हुआ। समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्य पशुधन अधिकारी डॉ ० वी० के० सिंह ने अपने वक्तव्य में सभी युवा कृषकों को पशुधन के बारे में तथा उन्हें संबंधित योजना का लाभ लेने हेतु प्रेरित किया एवं बीमार पशुओं के चिकित्सकीय सुविधा हेतु सभी को टॉल फ्री नंबर 1962 भी दिया तथा आवारा पशुओं को उठाने के लिए और उठा कर गौशालाओं में छोड़ने के लिए मोबाइल वैन की व्यवस्था के विषय मे जानकारी प्रदान की। इसके अलावा उन्होंने नंद बाबा दुग्ध मिशन योजना के विषय मे किसानों को जानकारी प्रदान की। तथा अध्यक्षता कर रहे विशिष्ठ अतिथि क्षेत्रीय निदेशक डॉ ० संजय कुमार ने एनसीडीसी के द्वारा कृषक उत्पादक संगठन के सदस्यों एवं उन्नतशील कृषको को राष्ट्रीय सहकारी निगम द्वारा लाभान्वित करने हेतु हम सभी सदैव तत्पर एवं कटिबद्ध है। उपनिदेशक नागेंद्र ने तकनीकी प्रशिक्षण देते हुए युवा किसानों को प्रोत्साहित किया एवं कहा कि युवा किसान अपने व्यवसाय को तकनीकी रूप से शक्षम बना कर उन्हें आगे बढ़ा सकते है। अध्यक्षता करते हुए कृषक उत्पादक संगठन के अध्यक्ष ई० अमित सिंह ने सभी युवा कृषको को कंप्यूटर में निशुल्क

प्रशिक्षण करा कर उन्हें पीएसीएस एवं कृषक उत्पादक संगठन से जोड़ कर उनको व्यावसायिक रूप से लाभ पहुचाने हेतु प्रेरित किया।कृषक उत्पादक संगठन के सचिव डॉ० रामकुमार राय ने अपनी ट्रेनिंग में व्यवहारिक कार्ययोजना पर प्रकाश डाला तथा संगठन के संरक्षक अनिल कुमार सिंह ने सभी युवा कृषको एवं एनसीडीसी के अधिकारियों को धन्यवाद देते हुए सभी को पर्यावरण संरक्षण हेतु सपथ दिलाई।

फूलपुर में व्यापारियों के निधन पर शोक, बन्द रहे बाजार

प्रखर पिंडरा वाराणासी। फूलपुर बाजार में एक ही दिन दो ब्यापारियों के निधन पर शोक की लहर दौड़ गई। शोक में पूरे दिन बुधवार को बाजार में पूर्णतः बंदी दिखी। बताते हैं कि गत दिनों उद्योग व्यापार मण्डल का शपथ ग्रहण समारोह हुआ था। उसके बाद मंगलवार की रात साढ़े 8 बजे व्यापार मंडल की पहली बैठक अध्यक्ष प्रकाश चंद अग्रहरि द्वारा बुलाई गई थी। बैठक के दौरान ही उन्हें सीने में दर्द की शिकायत होने पर वह बैठक से उठकर घर पहुचे और तेज दर्द होने पर वह अस्पताल जा रहे थे कि रास्ते मे मौत हो गई। 60 वर्षीय नवनियुक्त अध्यक्ष के व पेंट व्यवसाई के निधन पर सुबह व्यापार मंडल के पदाधिकारियों ने शोक सभा कर पूरे दिन के लिए अपने प्रतिष्ठान को बन्द रखा। वही फूलपुर के ही मिठाई की दुकान चलाने वाले नागेश्वर उर्फ नगदु मोदनवाल 60 वर्ष की लंबी बीमारी के बाद मंगलवार की रात बीएचयू में मौत हो गई। दोनो ब्यापरियो के निधन पर पूरे बाजार में शोक का माहौल दिखा और चायपान की दुकान तक बन्द रहे।

शादी की सालगिरह के दिन कैबिनेट मंत्री अनुप्रिया पटेल के पति मंत्री आशीष पटेल सड़क दुर्घटना में घायल

प्रखर मिजार्पुर। कैबिनेट मंत्री आशीष पटेल एक सड़क हादसे में घायल हो गए हैं। बताया जा रहा है कि मिजार्पुर प्रयागराज मार्ग पर घटना घटी है। घटना की जानकारी होते ही पुलिस और पार्टी कार्यकर्ता मौके पर पहुंच गए हैं। प्रदेश की योगी सरकार में कैबिनेट मंत्री आशीष पटेल प्रयागराज मिजार्पुर मार्ग पर सड़क दुर्घटना में घायल हो गए हैं। मेजारोड के पास काफिले के वाहनों के आपस में टकराने से उनके पैर, हाथ और सीने में चोट आई है। ट्रामा सेंटर में उनका इलाज चल रहा है। घटना का एक वीडियो भी सामने आया है जिसमें आशीष पटेल घायल दिख रहे हैं। उन्हें उपचार के लिए अस्पताल लाया गया है। उनके आसपास काफी भीड़ भी दिख रही है। आज आशीष पटेल की शादी की सालगिरह भी है। उनकी पत्नी और मोदी सरकार में केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल ने बुधवार सुबह दो ट्वीट भी किए ते। जिसमें उन्होंने आशीष पटेल के साथ

फोटो शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा था- ज़िंदगी में रंग कई, वक़्त ने भर डाले साथ-साथ हमने क्या खूब शौक पाले किसी एक के बस की बात न थी, सो मिलकर हमने ये मसले सम्भालें। वहीं, एक दूसरे ट्वीट में लिखा- वक़्त गुजरते,वक़्त नहीं लगता! चुटकी बजाते 14 साल गुजर गए ।एक-दूसरे का हाथ थामते वक़्त जीवन की अलग कल्पना मन में थी। क्या पता था ज़िंदगी हमारे सपनों में कुछ अलग रंग भर देगी। जीवन के टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर चलते हुए हम दोनों ने कुछ खोया, कुछ पाया। बता दें कि अनुप्रिया पटेल अपना दल के संस्थापक सोनेलाल पटेल की बेटी हैं और अभी केंद्रीय मंत्री भी हैं। वहीं, आशीष एमएलसी हैं और योगी सरकार में मंत्री हैं। आशीष पटेल योगी सरकार 2.0 में तकनीकी शिक्षा मंत्री हैं।

स्वच्छता नागरिकों की जीवन शैली का मूलभूत सिद्धांत बन गया है

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा के तहत केंद्रीय संचार ब्यूरो सुचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार वाराणसी द्वारा आज माँ दुर्गे बालिका इंटर कालेज लहरतारा वाराणसी में स्वछता ही सेवा विषय पर गोष्ठी, प्रश्नोतरी प्रतियोगिता, रैली का आयोजन और श्रमदान किया गया तथा स्वच्छता की शपथ दिलाई गयी। क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी, डॉ लालजी ने बताया की स्वच्छ भारत मिशन-शहरी और ग्रामीण द्वारा संयुक्त रूप से 15 सितंबर से 2 अक्टूबर 2023 के बीच स्वच्छता ही सेवा (एसएचएस) पखवाड़ा मनाया जा रहा है इस पखवाड़े का उद्देश्य सफाई मित्र सुरक्षा शिविर और सामूहिक स्वच्छता अभियान जैसी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से देश भर में करोड़ों नागरिकों की भागीदारी बनाना है जिससे हम

अपने गांव शहर, स्कूल सार्बजनिक स्थल को साफ - सुथरा रखने के लक्ष्य के प्रति फिर से प्रतिबद्ध हों स्वच्छ भारत मिशन एक सामान्य सरकारी कार्यक्रम के बजाय एक 'जन आंदोलन' बन गया है और नागरिकों की जीवन शैली का भी मूलभूत सिद्धांत बन गया है पिछले नौ वर्षों में 12 करोड़ शौचालय बनाए गए हैं जिससे देश को खुले में शौच के अभिशाप से मुक्ति मिली है। स्वच्छ भारत मिशन के 9 साल पूरे होने पर 2 अक्टूबर 2023 को स्वच्छता दिवस मनाया जायेगा 15 सितंबर से 2 अक्टूबर, 2023 तक 'स्वच्छता ही सेवा' पखवाड़ा का आयोजन किया जा रहा है 2 अक्टूबर को राष्ट्र महात्मा गांधी की जयंती मनाता है स्वच्छता ही सेवा 2023 का मूल विषय कचरा मुक्त भारत है। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के दस विजेता आरती, नैंसी, मीनल, पूजा, श्रेया, कशिश, स्वेता, खुशी, जूही और शुभम को पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्यक्रम में शिवाश्रय जायसवाल, कंचनलता पाण्डेय, रेखा श्रीवास्तव, शिवांगी, प्रज्ञा, मीना, नीलम मधु सहित अनेक लोग शामिल रहे।

प्रदेश के कोटेदारों का कमीशन बढ़ाया जाय : राजेश तिवारी

प्रखर सोनभद्र। आल इंडिया फेयर प्राइज शाप डीलर्स फेडरेशन उत्तर प्रदेश ईकाई के जिला सोनभद्र के जिला की बैठक में मुख्य अतिथि प्रदेश अध्यक्ष राजेश तिवारी ने कहा कि उत्तर प्रदेश के कोटेदारों का कमीशन जल्द से जल्द बढाया जाय।तथा सभी पिछले बकाया भुगतान किया जाय। प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष गिरीश तिवारी ने कहा कि उत्तर प्रदेश के राशन डीलरो का एक कन्वेंशन लखनऊ में 31अक्टूम्बर को रविन्द्रालय सभागार लखनऊ में किया जायेगा। प्रदेश भर राशन डीलर उपस्थित होंगे। सोनभद्र में आज जिला कार्यकारिणी घोषित किया गया। जिसमें नरेंद्र देव पाण्डेय को मण्डल अध्यक्ष विंध्याचल तथा विनोद पटेल को जिलाध्यक्ष बनाया गया नन्दलाल श्रीवास्तव को जिला उपाध्यक्ष अजय विश्वकर्मा को महामंत्री ज्योति प्रकाश दूबे को जिला उपाध्यक्ष सुरेन्द्र पटेल को जिला सचिव वीरेंद्र कुमार को जिला सचिव मनोनीत गया। बैठक में ज़िले के समस्त कोटेदार उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

निर्माण कार्य में लगे मजदूर ने फांसी लगाकर दी जान

प्रखर पिंडरा वाराणसी। फूलपुर थाना क्षेत्र के पिंडरा स्थित विद्युत उपकेंद्र के परिसर में बन रहे हॉट प्लाजा के निर्माण में लगे 38 वर्षीय मजदूर ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। बताते हैं कि झांसी जिले के थाना मऊ के धारपुरा निवासी गया प्रसाद विद्युत उपकेंद्र परिसर में बन रहे हॉट प्लाजा में मजदूरी करता था। सूत्रों के मुताबिक पत्नी के विवाद व घर से फोन आने के बाद उसने रात्रि 11 बजे के बाद विद्युत उपकेंद्र के परिसर में आम के पेड़ के सहारे लटक कर जान दे दी। मृतक पत्नी हीरा 45 वर्ष व अपने मामा मामी के साथ काम करता था। मृतक के पत्नी की यह दूसरी शादी है। उसे दो पुत्र व एक पुत्री है । सुबह शौच के लिए निकली महिलाएं ने लटकते शव को देख परिजनों को सूचना दी। सूचना पर पहुची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर अंत्यपरीक्षण हेतु भेज दिया। दूसरी तरफ वहाँ काम कर रहे अन्य मजदूरों ने बताया कि रात में बीमार बेटे का घर से फोन आया था। बेटे के कैंसर के इलाज में बहुत खर्च होने और कर्ज के चलते सम्भवतः आत्महत्या कर ली।

लोकसभा चुनाव के लिए भाजपाइयों ने की तैयारी बैठक

प्रखर पाली, सहजनवां। भाजपा ने एक दिवसीय बूथ सशक्तिकरण कार्यशाला का आयोजन बुधवार घघसरा हनुमान मंदिर पर हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ डा.श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी व पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। पार्टी पदाधिकारी और कार्यकताओं को बूथ को सत्यापित कर सक्रिय करने का मंत्र दिया गया। कार्यक्रम प्रभारी जिला महामंत्री राजाराम कनौजिया ने कहा कि 129 बूथों को सत्यापित कर योजना बनानी है। कार्यकताओं को मिशन मोड में जुड़ने का आवाहन किया। ब्लॉक प्रमुख शशी प्रताप सिंह,क्षेत्रीय पिछड़ा मोर्चा महामंत्री मनोज सिंह,मंडल अध्यक्ष शिवचरण प्रसाद,वरिष्ठ नेता विजेंद्र नाथ मिश्रा,ध्रुव कुमार गौड़,मनोज मौर्य,राणा प्रताप राज,शैलेंद्र चौरसिया,योगेंद्र सिंह,जगदीश यादव,विजय बहादुर सिंह,प्रभाकर त्रिपाठी,चंद्रशेखर गुप्ता समेत समस्त भाजपा पदाधिकारी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

गैंगस्टर एक्ट का आरोपित पुलिस के आला अधिकारी को कर रहा है सम्मानित, फोटो सोशल मीडिया पर वायरल

गुंडा एक्ट गैंगस्टर की सजा काट कर जमानत पर जेल से हुआ है रिहा

प्रखर जौनपुर। पुलिस अधीक्षक डॉ अजय पाल शर्मा जब से जिले के कप्तान के रूप में कार्यभार ग्रहण किये है तब से अपराधियों की धरपकड़ तेज हो गई थी। पुलिस पूरी तरह से अपराधियों को ढूंढ ढूंढ कर पकड़ रही थी। ऐसा ही एक मामला देखने को मिला था जब नगर कोतवाली थाना क्षेत्र का रहने वाला गैंगेस्टर का आरोपी हसन जाहिद बाबू जो पुलिस की सरपरस्ती में खुलेआम नेताओं और अपराधियों के साथ फोटो खिंचवाते हुए साफ दिखाई देता था। जिसका फोटो सोशल मीडिया पर लगातार वायरल होता था तब भी पुलिस की नजर इस गैंगेस्टर के आरोपी पर नहीं पड़ती थी। लेकिन जब से जिले के कप्तान के रूप में अजय पाल शर्मा ने कमान संभाला पुलिस को अंतत इस गैंगस्टर के आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेजना पड़ा था। जिले में समाजसेवी की इतनी कमी हो गई कि गुंडा एक्ट गैंगस्टर की सजा काट कर जमानत पर जेल से रिहा हुआ आरोपी जनपद पुलिस के आला अधिकारी को सम्मानित कर रहा है जो चर्चा का विषय बना हुआ है। सम्मानित करते फोटो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल भी हो रहा है।

तीसरी बार अमित सिंह अध्यक्ष व केतन विश्वकर्मा बने महामंत्री

प्रखर केराकत जौनपुर। छितौना स्थित गोमती पब्लिक स्कूल केराकत के परिसर में बुधवार को पत्रकार संघ केराकत इकाई के पदाधिकारियों का गठन हुआ। जिसमें तीसरी बार अमित सिंह को अध्यक्ष, केतन विश्वकर्मा को पुनः महामंत्री और अनूप शुक्ला को संगठन मंत्री चुना गया। केराकत इकाई के संरक्षक मंडल के नेतृत्व में हुए इस चुनाव में संघ की कार्यकारिणी के समस्त पदों पर पदाधिकारियों का चुनाव किया गया। पत्रकारों को संबोधित करते हुए पत्रकार संघ केराकत के संरक्षण व आरएसएस प्रान्त कार्यवाह मुरली पाल ने कहा कि पत्रकारों के मान सम्मान, स्वाभिमान व हितों की लड़ाई लड़ने से पत्रकार संघ कभी पीछे नहीं हटेगा। उन्होंने कहा कि पत्रकार समाज का दर्पण होता है और सभी को पत्रकारिता करते हुए यह ध्यान रखना होगा कि आपकी छवि पर आंच ना आए। संरक्षक आरिफ अंसारी ने कहा कि पत्रकारों को संगठित होना जरूरी है। उन्होंने पत्रकारों से सभी भेदभाव भूलकर एक रहने की अपील की।

प्रखर पूर्वांचल

RNIUPHIN/2016/68754

मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस' सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001 से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित

सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001

सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802

सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।

ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट
https://prakharpurvanchal.com
Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं